Language and Learning foundation

TATA TRUSTS

मॉड्यूल 3

सीखने–सिखाने के कुछ सिद्धांत और रणनीतियाँ

इकाई 1 : सीखना क्या है?

इकाई 2 : सीखने–सिखाने के कुछ प्रमुख सिद्धांत और रणनीतियाँ

प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफ़िकेट कोर्स 2018

कोर्स मॉड्यूलों में प्रयुक्त प्रतीक

ज़रा सोचिए

फ़ोन कॉल के लिए प्रश्न

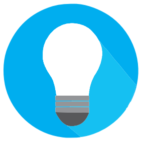
मुख्य संदेश/बिंदु/रोचक तथ्य

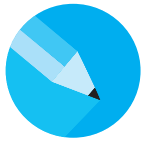
गतिविधियाँ : पढ़िए, सोचिए और करिए

मॉड्यूल के साथ सुनने वाले ऑडियो

स्व– आकलन

मॉड्यूल के साथ देखे जाने वाले वीडियो

अभ्यास कार्य

आवश्यक पठन या अतिरिक्त पठन

असाइनमेंट

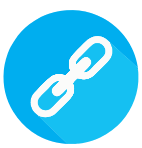
किसी खण्ड या मॉड्यूल के बीच में संबंध

केस स्टडी

सीखने–सिखाने के कुछ सिद्धांत और रणनीतियाँ

इकाई 1 : सीखना क्या है?

इकाई 2 : सीखने–सिखाने के कुछ प्रमुख सिद्धांत और रणनीतियाँ

मॉड्यूल–3

तृतीय संस्करण – 2018

डवलपमेंट पार्टनर्स

TATA TRUSTS

CENTRAL SQUARE FOUNDATION

© लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन 2018
इस कोर्स के तहत छपी किसी सामग्री का पुनः प्रकाशन लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन की अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता। यदि आप इसमें से कुछ सामग्री प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमें course@languageandlearningfoundation.org पर ईमेल भेजें।

विषय सूची

अब तक हमने पढ़ा		**01**
भूमिका		**03**
अधिगम उद्देश्य		**03**
इकाई–1 : सीखना क्या है?		**04**
1.	सीखना क्या है?	04
2.	सीखना और सीखने की प्रक्रिया को समझना	07
3.	सीखने के बारे में अभी तक की समझ	13
4.	सीखने पर प्रभाव डालने वाले कारक	14
इकाई–2 : सीखने–सिखाने के कुछ प्रमुख सिद्धांत और रणनीतियाँ		**16**
1.	कक्षा को बच्चों की दुनिया से जोड़ना	17
	1.1 बच्चों की दुनिया और पाठ्यचर्या के शब्दों का आपस में कोई रिश्ता नहीं है	19
2.	बच्चों के पूर्वज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल	22
	2.1 बच्चों के पूर्वज्ञान का शिक्षण में प्रयोग	25
3.	बच्चे दूसरों से/के साथ सीखते हैं	27
	3.1 कक्षा के शिक्षण के लिए इसका अर्थ है	27
4.	स्कैफ़ोल्डिंग : सीखने में सहारा देना	28
	4.1 स्कैफ़ोल्डिंग : कुछ नया सीखने के लिए ज़रूरत अनुसार सहारा/मदद	30
	4.2 स्कैफ़ोल्डिंग का शिक्षा में प्रयोग	32
	4.3 सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः बच्चों को सौंपना/जी.आर.आर. (Gradual Release of Responsibility/G.R.R.)	33
5.	कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण	36
	5.1 कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण कैसे बनाएँ?	37

विषय सूची

6.	सीखने की प्रक्रिया में सभी बच्चों का जुड़ाव		38
	6.1	बच्चों का जुड़ाव बढ़ाने के लिए कुछ रणनीतियाँ :	41
7.	सोचने की प्रक्रिया के लिए मौके और प्रोत्साहन देना		42
	7.1	बच्चों में सोचने के कौशल की महत्ता	43
	7.2	सोचने के कौशल का शिक्षण में प्रयोग	43
8.	विस्तारित वार्तालाप के अवसर		46
	8.1	विस्तारित वार्तालाप की महत्ता	49
	8.2	कक्षा में विस्तारित वार्तालाप बढ़ाने के तरीके	50
9.	सीखना–सिखाना और सतत–आकलन		52
	9.1	आकलन के बाद : फ़ीडबैक और सुधार के लिए मदद	53
	9.2	बच्चों के अलग–अलग स्तर	54
	9.3	आकलन और फ़ीडबैक : केस स्टडी	55
निष्कर्ष और सारांश			**57**
स्व–आकलन			**58**
अनिवार्य पठन सामग्री			**55**
	1.	कोई बच्चा बात नहीं करेगा! भाषा की कक्षाओं में बोलना और चुप कराना : भेद, संवाद और अधिगम के बारे में	61
असाइनमेंट			**64**
संदर्भ			**66**

शब्दावली

विस्तारित वार्तालाप (Exploratory Talk)

विस्तारित वार्तालाप ऐसी बातचीत है जिसमें भागीदारी करने वाले लोग एक–दूसरे के विचारों की समीक्षा करते हुए रचनात्मक ढंग से बात को आगे बढ़ाते हैं। प्राथमिक कक्षाओं के संदर्भ में यह चर्चा अध्यापक और बच्चों के बीच में हो सकती है अथवा बच्चों–बच्चों के बीच में भी हो सकती है। इस प्रकार की अन्तःक्रिया का उद्देश्य किसी मुद्दे/विषय पर बच्चों की समझ बनाना होता है। यह बच्चों को अधिक सोचने के लिए उकसाता है, जिससे वे सक्रिय व सचेत रूप से सीखते हैं।

पूर्वज्ञान

किसी विशिष्ट विषय अथवा कौशल के बारे में पूर्व में विद्यमान ज्ञान अथवा अनुभव। कुछ भी नया सीखते/करते समय बच्चों का यह पिछला ज्ञान या समझ बेहद ज़रूरी होता है, क्योंकि नए ज्ञान का निर्माण इस पूर्वज्ञान के आधार पर ही किया जा सकता है।

ज़ोन ऑफ प्रॉक्सिमल डेवलपमेंट / ज़ेड.पी.डी. (Zone of Proximal Development / ZPD)

शब्दशः इसका अर्थ है– विकास का निकटवर्ती क्षेत्र। बच्चा स्वतंत्र रूप से क्या कर सकता है और निश्चित मदद के साथ (स्कैफ़ोल्डिंग) वह क्या करने में सक्षम है, इन दोनों के बीच का अंतर ज़ोन ऑफ प्रॉक्सिमल डेवलपमेंट/ज़ेड.पी.डी. होता है। बच्चों द्वारा सीखना इसी क्षेत्र में सम्पन्न होता है। यह अवधारणा सोवियत मनोवैज्ञानिक लेव वाईगोत्स्की द्वारा दी गई थी। ज़ेड.पी.डी. को शिक्षण का स्तर भी कहा जाता है। यह वह क्षेत्र होता है, जहाँ शिक्षण का फ़ोकस होना चाहिए, ताकि प्रत्येक बच्चा अधिकतम अधिगम उपलब्धि हासिल कर सके।

स्कैफ़ोल्डिंग (Scaffolding)

स्कैफ़ोल्डिंग उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें किसी नई अवधारणा अथवा कौशल को सीखने में बच्चों को मदद दी जाती है।यह वह सहारा या मदद है जो शिक्षक द्वारा बच्चों को लगातार देनी होती है, जब वे कोई नया ज्ञान या कौशल सीख रहे हों। इसमें यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों का जो स्तर इस समय है, उससे कुछ ऊपर के स्तर की चुनौती बच्चों को दी जाए।

यह मदद अध्यापक, किसी वयस्क अथवा अधिक सक्षम सहपाठी द्वारा बच्चों को उपलब्ध कराया जाने वाला एक अस्थायी मार्गदर्शन या सहयोग होता है। इस मार्गदर्शन अथवा सहयोग के बिना स्वतंत्र रूप से बच्चे उस

काम को करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह मार्गदर्शन बच्चों की उन क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से दिया जाता हैं, ताकि आगे जाकर बच्चा उस काम को स्वयं ही स्वतंत्र रूप से करने लगे।

सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः सौंपना / जी.आर.आर. (Gradual Release of Responsibility / GRR)

कक्षा में बच्चों को स्कैफ़ोल्डिंग देने का एक प्रभावी तरीका सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः सौंपना अथवा जी. आर.आर. है। इसमें शिक्षक सीखने की ज़िम्मेदारी धीरे–धीरे बच्चों को सौंपता हैं। इस रणनीति के तहत चार मुख्य चरण होते हैं, जिसमें कक्षा में किए जाने वाले कामों को धीरे–धीरे तथा जान–बूझकर अध्यापक से हटाकर अध्यापक और बच्चों के बीच संयुक्त ज़िम्मेदारी की ओर फिर संयुक्त ज़िम्मेदारी से बच्चे द्वारा स्वतंत्र अभ्यास और उपयोग की ओर ले जाना होता है। यह रणनीति, इस अपेक्षा से कि ''सारी ज़िम्मेदारी अध्यापक की है'' से आगे बढ़कर ''बच्चे सारी ज़िम्मेदारी ले रहे हैं" की स्थिति तक पहुँचती है। यह ज़िम्मेदारियों का क्रमशः हस्तांतरण एक दिन में हो सकता है, एक सप्ताह में हो सकता है, एक महीने में हो सकता है अथवा इसमें एक साल भी लग सकता है।

सतत आकलन (Formative Assessment)

इसे प्रायः 'सीखने के लिए आकलन' भी कहा जाता है। यह आकलन लगातार चलने वाला आकलन है जो कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा होता है। इस आकलन में हर बच्चे पर ध्यान दिया जाता है और आगे सुधार के लिए कार्यवाही होती है। चाहे वह आकलन शिक्षण रणनीतियों में सुधार अथवा अलग प्रकार से शिक्षण की आवश्यकता से संबद्ध हो या बच्चों को सुधारात्मक फ़ीडबैक देना हो।

अब तक हमने पढ़ा

आगे बढ़ने से पहले आइए, पिछले दो मॉड्यूलों में पढ़े भाषा–शिक्षण से संबंधित कुछ मुख्य सिद्धांतों का हम पुनः दोहरान कर लें–

टेबल–1

मुख्य सिद्धांत	कक्षा में उसका उपयोग
पढ़ना सीखने और पढ़ने का एकमात्र उद्देश्य है – अर्थ निर्माण करना।	1. अर्थ समझना केवल सतही स्तर पर शब्दार्थ समझने तक सीमित न रहे। इसमें सोचना, निष्कर्ष निकाल पाना और अपने पूर्वज्ञान से जोड़ते हुए नए ज्ञान का निर्माण कर पाना शामिल है। 2. मौखिक बातचीत में और कहानी/पाठ पढ़ कर सुनाते हुए केवल 'कौन', 'क्या', 'कहाँ' वाले सवालों की बदले उच्च–स्तरीय सवाल, जैसे– 'क्यों', 'कैसे', 'इसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?', इत्यादि भी ज़रूर पूछें। 3. बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु उनकी प्रथम भाषा का प्रयोग करें और बच्चों को भी अपनी भाषा में बातचीत करके निष्कर्ष निकालने का अवसर दें।
मौखिक भाषा पढ़ना और लिखना सीखने की नींव है। प्रारंभिक कक्षाओं में इसे समृद्ध करना भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।	1. विभिन्न मौखिक गतिविधियों और खेल (मॉड्यूल 5) द्वारा बच्चों को बोलने का ज़्यादा से ज़्यादा अवसर दें। 2. किसी पाठ को पढ़ने के दौरान और बाद में उस पर अधिक चर्चा करें जिसमें बच्चों को खुलकर अनुमान लगाने, कहानी सुनाने और अपनी राय देने के अवसर मिले। 3. बच्चों को अपनी प्रथम भाषा या मिश्रित भाषा में बात करने के अवसर दें।
सभी बच्चों की भाषा–कक्षा के दौरान सक्रिय भागीदारी बनी रहनी चाहिए। यह सीखने की एक पूर्व शर्त है।	1. बच्चों को जोड़ों और छोटे समूहों में काम करने का अवसर दें। 2. पाठ को बच्चों के संदर्भ से जोड़ें। 3. मौखिक बातचीत से उन बच्चों को जोड़े रखें, जो इस समय पढ़ना नहीं सीख पाए हैं।
डिकोडिंग के कौशलों (अक्षर–ध्वनि का संबंध, ध्वनियों को जोड़कर तेज़ी से शब्द पढ़ पाना) से व्यवस्थित शिक्षण से जल्दी विकसित करना चाहिए।	1. कई गतिविधियों और खेलों के ज़रिए बच्चों को डिकोडिंग सीखने के अवसर दें। (मॉड्यूल 5) 2. जल्दी से जल्दी बच्चे वर्णों/अक्षरों को जोड़कर शब्द और वाक्य पढ़ने का अभ्यास कर सकें। 3. हालाँकि, डिकोडिंग सिखाने पर प्रति दिन 20–30 मिनट से ज़्यादा समय नहीं देना चाहिए।

सीखने–सिखाने के कुछ सिद्धांत और रणनीतियाँ

मुख्य सिद्धांत	कक्षा में उसका प्रभाव
शुरुआत से ही लेखन के विभिन्न उद्देश्यों से बच्चों को परिचित कराना चाहिए। लेखन का काम केवल सुलेख और देखकर लिखने तक सीमित नहीं होना चाहिए।	1. शुरुआत में बच्चे आड़ी–तिरछी लकीरों ओर चित्रांकन के ज़रिए अपने विचार–भावनाएँ व्यक्त कर सकें। 2. बाद में अपने शब्दों में छोटे–छोटे वाक्य (जो बच्चों की दुनिया से जुड़े हों) लिखने के लिए प्रोत्साहित करे और शुरुआत में वर्तनी की गलतियों पर ज़्यादा ज़ोर देने से बचें।
पढ़ना सीखने के लिए बच्चों द्वारा सुनकर सामूहिक दोहरान करना सही तरीका नहीं है।	1. बच्चों को खुद शब्द और वाक्य पढ़ने का अवसर दें। 2. कक्षा में प्रिंट से भरा माहौल हो– चार्ट, शब्द दीवार, कहानी की किताबें आदि। 3. कक्षा में रोचक और सरल, सचित्र कहानी की किताबें होनी चाहिए, साथ ही बच्चों को शुरू से ही उन्हें पलटने / पढ़ने / देखने के अवसर मिले।
घर पर प्रिंट और साक्षरता के अभाव की पूर्ति करने के लिए बच्चों को कक्षा में शुरू से ही प्रिंट की अवधारणा और उद्देश्यों से	1. भाषा कक्षा में शुरुआती काम वर्णमाला या अक्षर ज्ञान से न हो। 2. बच्चों को रोज़ किताबों से पाठ पढ़कर सुनाया जाए और उस पर चर्चा हो। 3. बच्चों को लिखित सामग्री की समझ बनाने का समय और अवसर मिले। बच्चे अच्छा पढ़ना और लिखना सीखें, इस का पूरा ज़िम्मा स्कूल का होना चाहिए।

भूमिका

मॉड्यूल–2 में हम इस बात पर सहमत हुए कि **'अगर बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं तो इसका मतलब है कि अध्यापन या कम से कम कुशल अध्यापन तो नहीं हो रहा है।'** और यह भी कि पढ़ाने का मतलब पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक पूरी करवा देना ही नहीं है बल्कि इसका आशय बच्चों के सीखने से है। प्रस्तुत मॉड्यूल में हम शुरुआती कक्षाओं में सभी बच्चों के सीखने (अधिगम) को प्रोत्साहित करने वाले सिद्धांतों व रणनीतियों पर और गहराई से विचार करेंगे। यहाँ हम इन सवालों पर ग़ौर करेंगे : बच्चे सीखते कैसे हैं? विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण पद्धति के तत्व कौन से होते हैं? छोटे बच्चों को उत्साहपूर्ण और सकारात्मक शैक्षिक वातावरण प्रदान करने के लिए अध्यापक क्या रणनीतियाँ अपना सकते हैं? सीखने के स्तर के सबसे निचले छोर पर रहने वाले बच्चों को कक्षा – प्रक्रियाएँ किस तरह पर्याप्त सहायता प्रदान कर सकती हैं?

मॉड्यूल के उद्देश्य

1. छोटे बच्चों (कक्षा 1 से 3) में सीखने की प्रक्रिया को समझना और यह भी समझना कि इससे शिक्षण के लिए क्या निहितार्थ निकलते हैं।
2. शोध के निष्कर्ष से प्राप्त, सीखने के कुछ विशिष्ट सिद्धांतों को और भाषा की कक्षा में उन्हें लागू करने के लिए रणनीतियाँ समझना।

इस मॉड्यूल का परिचयात्मक ऑडियो सुनने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

इकाई–1
सीखना क्या है?

1. सीखना क्या है?

आइए, समझने की कोशिश करते हैं कि बच्चे सीखते कैसे हैं? हालाँकि, इससे पहले यह पूछना ज़रूरी है कि सीखना या अधिगम हम किसे कहते हैं?

आपने अपनी कक्षाओं में नीचे दिए गए दृश्यों को देखा होगा। ज़रा सोचिएँ कि इनमें बच्चे क्या सीख रहे होंगे?

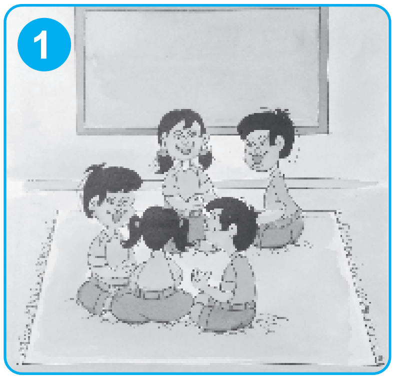

बच्चे आपस में बातें करते हुए

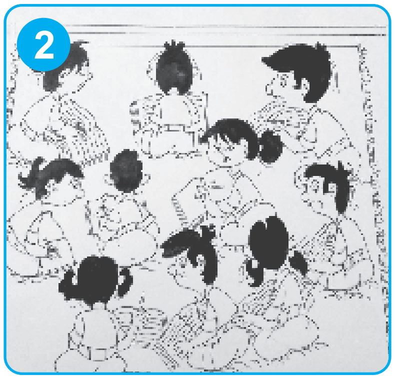

बच्चे ब्लैकबोर्ड से ज्यों–का–त्यों कॉपी करते हुए

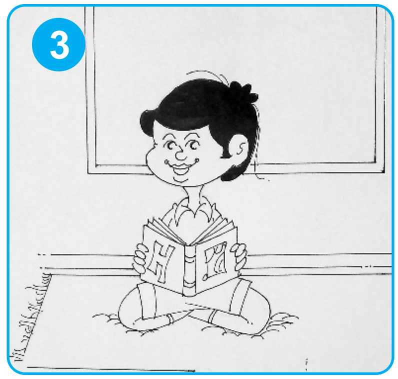

बच्चा चुपचाप अपने आप पढ़ता हुआ

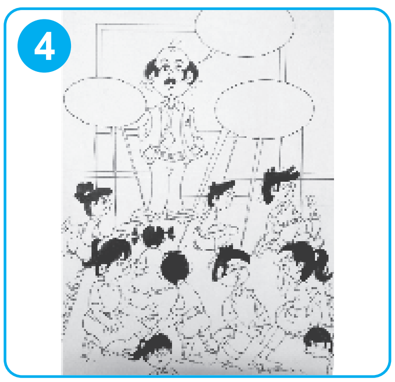

बच्चे अध्यापक के पीछे शब्दशः दोहराते हुए

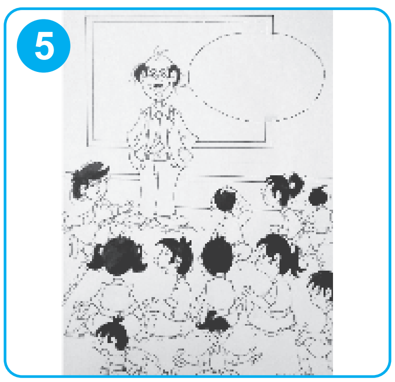

अध्यापक बोलते हुए और बच्चे चुपचाप सुनते हुए

बच्चा किताब से पढ़कर बोलता हुआ

चित्र–1

गतिविधि–1

यहाँ कक्षा शिक्षण से जुड़े कुछ तरीकों की सूचि दी गई हैं। आपके अनुसार इनमें से कौनसे तरीकें सीखने के लिए प्रभावी हैं और कौनसे कम प्रभावी हैं? अपने उत्तर नीचे दी गई तालिका में लिखें।

1. अपनी बात कह कर समझा पाना	2. खूब बातचीत करना	3. सुनने का नाटक करना
4. कल्पना–शीलता	5. समूह चर्चा	6. चित्र बनाना
7. भाषा का इस्तेमाल करना	8. केवल रटना	9. सुनकर समझना
10. अपने मन से कुछ लिखना	11. सही उच्चारण	12. सुनकर मजा लेना
13. सक्रिय बच्चों को आगे बिठाना	14. अध्यापक का कक्षा में वर्चस्व	15. बच्चों को आपस में बात करने की मनाई
16. ज्यादा प्रश्न पूछना	17. बिना समझे उतारना	18. पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य किताबों को भी पढ़ना

सीखने के प्रभावी तरीके (केवल संख्या लिखें)	सीखने के कम प्रभावी तरीके (केवल संख्या लिखें)

सीखने सिखाने के दौरान उप्पर दी गई सभी बातें आपको कक्षा में देखने को मिलती होंगी, जिनमें से कुछ सीखने के लिए प्रभावी हैं और कुछ कम प्रभावी। इनके अलावा भी बहुत सी अन्य चीज़ें हैं जो बच्चे कक्षा में सीख रहे होते हैं, चाहे फिर उन्हें सिखाने की शिक्षक की मंशा हो या न हो। ध्यान से विचार करने पर आप पाएँगे कि 'सीखना' या 'अधिगम' असल में वह सब कुछ है जो बच्चे का दिमाग अपने आप अनुभवों से आत्मसात कर लेता है।

ध्यान से विचार करने पर आप पाएँगे कि 'सीखना' या 'अधिगम' असल में वह सब कुछ है जो बच्चे का दिमाग अपने आप अनुभवों से आत्मसात कर लेता है।

शिक्षाविद् बताते हैं कि सीखने के नाम पर तीन मुख्य प्रकार की चीज़ें सीखी जाती हैं –

1. **ज्ञान (Knowedge)** – इसमें सारी समझ, बनावट, अवधारणाएँ, वर्णन, चीज़ों के अर्न्तसंबंध, बारीकियाँ आदि शामिल हैं।

2. **क्षमताएँ (Skill)** – इसमें सारे कौशल शामिल हैं। ये सब भी कि कैसे बोलें, कैसे पढ़ें, कैसे लिखें, ज्ञान का कैसे विश्लेषण या प्रयोग करें आदि।

3. **मनोवृत्तियाँ (Attitude)** – इनमें वे सभी वृत्तियाँ शामिल हैं जो किसी भी वस्तु परिस्थिति या ज्ञान के बारे में मन में बन जाती हैं। जो भावनाएँ हम लगातार महसूस करते हैं वे हमारी मनोवृत्ति बन जाती हैं। अगर बच्चे को कक्षा में बोलने से बार–बार भय महसूस होता है, तो यह उसकी मनोवृत्ति के रूप में स्थापित हो जाएगा। बच्चे अक्सर ऐसी प्रवृतियाँ अचेतन रूप में आत्मसात कर लेते हैं, जैसे– डर, तनाव, मज़ा, रूचि, उत्सुकता, बोरियत, पढ़ाई से चिढ़ आदि।

ज्ञान, क्षमताओं व मनोवृत्तियों के इस समूह को ASK कहा जाता है– Attitude, Skills व Knowledge, यह शिक्षकों को यह सोचने में काफी मदद कर सकता है कि हम इन तीन वर्गों में से क्या सचेत रूप से सिखाना चाहेंगे या फिर बच्चे किसी विशेष शिक्षण गतिविधि में क्या सीख रहे होंगे।

यह बिल्कुल आवश्यक नहीं कि जो शिक्षक ने सोचा हो, बच्चे वहीं सीखें। अगर बच्चों को डर है कि ध्यान न देने पर उन्हें सजा मिलेगी तो वे आसानी से सुनने का नाटक करना सीख लेते हैं। क्या आप ऐसी चीज़ें उन्हें सिखाना चाहेंगे? ज़ाहिर है, नहीं।

एक शिक्षक होने के नाते आप यह सोच सकते हैं कि यदि बच्चे एसी प्रवृत्तियाँ सीख लेते हैं जो मैंने जानबूझ कर नहीं सिखाई, तो इनके लिए मैं कैसे ज़िम्मेवार हो सकता/सकती हूँ। सच बात तो यह है कि सीखने–सिखाने के मनोविज्ञान व सिद्धान्तों को समझ कर हम ऐसे परिणामों को काफी कम कर सकते हैं जो हम नहीं चाहते।

गतिविधि–2

शिक्षण के बारे में भारतीय शिक्षकों की क्या मान्यताएँ हैं, इस विषय में किए गए शोध (ब्रिंकमैन, 2016) में सरकारी स्कूलों के शिक्षकों से पूछा गया कि उनकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी कौन सी है। इससे संबंधित नीचे कुछ उत्तर दिए गए हैं। अनुमान लगाएँ कि इनमें से कौन–सा उत्तर सबसे ज़्यादा शिक्षकों द्वारा दिया गया होगा :

1. अनुशासन और समयबद्धता सुनिश्चित करना।
2. पढ़ाना और समय पर पाठ्यक्रम पूरा करना।
3. यह सुनिश्चित करना कि बच्चे असल में सीखें।
4. बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना।
5. बच्चों के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा।

उत्तर इकाई के अंत में देखें।

सच्चाई तो यह है कि पढ़ना और सीखना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तरह सिक्का अपने एक पहलू के बिना बन नहीं सकता, उसी तरह बच्चे के सीखे बिना पढ़ाने का अपने आप में कोई मकसद नहीं है। शिक्षण का इकलौता उद्देश्य है कि बच्चे उससे सीख पाएँ। साथ ही वे ज़्यादा से ज़्यादा वह सीखें, जो शिक्षक उन्हें सिखाना चाहते हैं।

अगर बच्चे सीख नहीं पा रहे हैं तो सही मायने में शिक्षण भी नहीं हो रहा है।

यह कैसे संभव है? आगे, हम इसकी और गहराई में जाएँगे और सीखने के उन सिद्धांतों की बात करेंगे जिन्हें मनोवैज्ञानिक पिछली सदी के अंत तक समझ पाएँ हैं ।

2. सीखना और सीखने की प्रक्रिया को समझना

आइए, नीचे कुछ व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से हम सीखने और सीखने की प्रक्रिया की कुछ अन्य बारीकियों पर गतिविधियों के ज़रिए नज़र डालें –

गतिविधि–3

प्रश्न 1. जब एक बच्ची किसी पाठ को शब्दशः सुनाती है, तो क्या उसने कुछ सीखा है? हाँ / नहीं

यदि हाँ, तो क्या?..

....

प्रश्न 2. जब एक बच्चा बोर्ड से या पाठ्यपुस्तक से, या शिक्षक के बताने पर ज्यों–का–त्यों कॉपी में उतारता है, तो क्या वह कुछ सीख रहा है? हाँ / नहीं

यदि हाँ, तो क्या?..

....

प्रश्न 3. जब बच्ची किसी प्रश्न का उत्तर पाठ्यपुस्तक से देने के बजाय अपनी समझ से देती है तो क्या वह कुछ नया सीख रही है? हाँ / नहीं

यदि हाँ, तो क्या?..

....

प्रश्न 4. यदि शिक्षक ने कुछ कहा और उस पर बच्चे उत्साहित होकर कुछ कहने लगते हैं, और आपस में बातें करने लगते हैं तो क्या वे कुछ सीख रहे हैं? हाँ / नहीं

यदि हाँ, तो क्या?..

....

प्रश्न 5. जब कोई बच्चा कक्षा में हमेशा चुपचाप बैठा रहता है, लेकिन इम्तहान में बहुत अच्छे अंक ले रहा है, तो क्या वह बहुत–कुछ सीख रहा है? हाँ / नहीं

यदि हाँ, तो क्या?..

....

प्रश्न 6. जब कोई बच्ची पाठ सुनती है और बताए गए विचार अपने शब्दों में व्यक्त करती है, तब क्या वह सीख रही है? हाँ / नहीं

यदि हाँ, तो क्या?..

....

हमारी राय में –

उत्तर 1. उसने अवश्य ही कोई चीज़ याद करना सीखा है (हो सकता है बार–बार दोहरान के द्वारा) । शायद, सही उच्चारण, वाणी का उतार–चढ़ाव आदि सीखा हो । लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि इस प्रक्रिया में उसने शब्दों के अर्थ समझे हों ।

उत्तर 2. बच्चा लिखने की कला सीखने के दौरान नए विचार या अर्थ भी सीख रहा हो सकता है । इसके उलट यह भी संभव है कि बच्चा कुछ भी नया नहीं सीख रहा ।

उत्तर 3. वह बच्ची अपनी मौजूदा समझ व अनुभवों का उपयोग करना तथा उसे लागू करना सीख रही है। उसके सहारे अर्थ–निर्माण कर रही है।

उत्तर 4. बच्चे एक–दूसरे के विचारों को सुनना, उन्हें बोलना और सही या गलत का निर्णय लेना सीख रहे हैं । वे अपनी राय प्रकट करना भी सीख रहे हैं।

उत्तर 5. यह संभव है कि बच्चा कक्षा में बहुत ध्यान से सुनकर समझ लेता हो। यह भी संभव है कि वह कक्षा के बाहर किसी तरह से सीख रहा है। यह भी संभव है कि यह बच्चा सब कुछ अच्छी तरह याद कर लेता है और केवल जानकारी जाँचने वाले इम्तिहान में बढ़िया अंक प्राप्त करता है ।

उत्तर 6. इस स्थिति में बच्ची अपने ज्ञान तथा तर्क करने व विचार व्यक्त करने की क्षमता का इस्तेमाल करना सीख रही है ।

इन सभी उदाहरणों से यह बात एक बार फिर स्पष्ट होती है कि भाषा बोलने, सुनने, लिखने या पढ़ने का महज़ यांत्रिक ज़रिया नहीं है, बल्कि एक गहरे स्तर पर जीवन की सारी समझ बनाने और अर्थ निकालने का मूल आधार है ।

ऊपर दिए उदाहरणों में हमने देखा कि किस तरह 'सीखना क्या है' इनमें निहित था। आइए, अब हम एक और गतिविधि के माध्यम से यह समझने की कोशिश करें कि सीखने की प्रक्रिया कैसी होती है।

गतिविधि–4

स्थिति–1: जब गीता को पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ने को दिया गया, उसने बिना पुस्तक की ओर देखे आत्मविश्वास के साथ पूरा पाठ सुना दिया। लेकिन जब उसे अपरिचित पाठ पढ़ने को दिया गया, वह उसे मुश्किल से अटक–अटक कर पढ़ पाई।

प्रश्न–1: क्या आप कहेंगे कि गीता पढ़ना जानती है? हाँ/ नहीं। उसकी पढ़ाई में आपको क्या कमी दिखती है ?

....

....

स्थिति–2: कक्षा में पाठ के अंत में दिए गए अभ्यास–प्रश्नों का सभी बच्चे सही–सही उत्तर दे सकते हैं। पाठ पढ़ने के बाद बच्चों ने इन प्रश्नों के उत्तर पाठ से अपनी कॉपी में उतारे हैं। वे ठीक उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जो पुस्तक में दिए गए हैं। लेकिन जब बच्चों से कहा गया कि अपने शब्दों में उत्तर बताओ तो वे अटकने लग गए और वाक्य नहीं बना पाए । इतना ही नहीं, जब बच्चों को पाठ के आधार पर अपना स्वयं निष्कर्ष निकालने के लिए कहा या अपनी राय देने को कहा गया (जैसे– क्या तुम सोचते हो कि चिड़िया को पिंजरे में डाला जाना चाहिए?क्यों?) तब कोई भी बच्चा सटीक उत्तर नहीं दे पाया। यही नहीं, तीन महीने बाद केवल एक या दो बच्चे ही पाठ से संबंधित कोई उत्तर दे पाए।

प्रश्न–2: क्या आप कहेंगे कि बच्चों ने पाठ पढ़ना ठीक से सीख लिया है? ज़ाहिर है, नहीं ! सोचिए इसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं? क्या आप यह ज़रूरी समझते हैं कि सभी बच्चों के उत्तर एक जैसे होने चाहिएँ? हाँ/नहीं। अपना कारण बताएँ।

....

....

स्थिति–3: राजस्थान के अजमेर ज़िले की कक्षा 2 के बच्चे तब भी उस पाठ का मुख्य संदेश नहीं निकाल पाए जबकि उन्हें पाठ पढ़ कर सुनाया गया और उस पर चर्चा की गई। यह 'तिरंगा' नाम का एक कठिन पाठ था। इसमें कई जटिल अवधारणाएँ व विवरण थे, जैसे– स्वतंत्रता, त्याग, देश की सुरक्षा, प्रतीक आदि। बच्चे केवल यह बोल पाए कि– हमें कई साल पहले आज़ादी मिली और अब हमारा झंडा यह दिखाता है कि हमारा देश किसी के नीचे नहीं है।

प्रश्न–3: आपके अनुसार बच्चों को पाठ का मुख्य संदेश निकालने में कठिनाई क्यों हुई? यदि बच्चे किसी पाठ में से जानकारी के छोटे–छोटे टुकड़े निकाल कर बता सकते हैं, तब क्या आप इसे प्रभावी शिक्षण मानेंगे? हाँ/नहीं। क्यों?

....

....

स्थिति–4: असम की कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक में बाढ़ पर एक पाठ है। इस पाठ का मुख्य संदेश है कि बाढ़ रोकने के लिए वन बचाना क्यों महत्वपूर्ण है? लगभग सभी कक्षाओं में, ज़्यादातर बच्चे यह बता पाए कि अगर हम ज़्यादा पेड़ लगाएँगे तो बाढ़ को रोकना संभव होगा। लेकिन 2–3 बच्चे ही

स्पष्ट रूप से इसका कारण बता पाए (जैसे कि पेड़ पानी को पहाड़ी ढलानों से तेज़ी से बहने से रोकते हैं।

प्रश्न–4: क्या आप इस प्रकार सीख पाना को प्रभावी मानेंगे? हाँ / नहीं। क्यों? आपके अनुसार बच्चे वृक्षों द्वारा बाढ़ के रोके जाने का कारण क्यों नहीं बता पाए?

....

....

हमारी राय में –

उत्तर 1 – गीता शायद पढ़ना जानती है लेकिन अभी भी वह स्वतंत्र पाठक नहीं बन पाई है। पाठ्यपुस्तक का पाठ असल में उसने ऐसे ही रट लिया है, और बिना पढ़े केवल स्मृति से सुनाती है। चूँकि नए पाठ वह बहुत धीमा व अटक कर पढ़ती है, पाठ समझ पाने की गुंजाइश काफ़ी कम है।

- जैसाकि हमने मॉड्यूल–2 में पढ़ा था कि हमारी कक्षाओं में अक्सर सामूहिक दोहरान अत्यधिक दिखता है जिसके चलते ऐसी अनुभूति होने लगती है कि बच्चों ने पढ़ना सीख लिया है किंतु वास्तविकता तो यह होती है वे सिर्फ़ पढ़ने का अभिनय मात्र कर रहे होते हैं और नए पाठ को पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं।

उत्तर 2 – इस उदाहरण में भी साफ़ दिखता है कि बच्चे ज़वाबों को याद ही कर रहे हैं। अभी उन्हें स्वयं वाक्य बनाकर अपनी बात को स्पष्ट रूप से कहना या समझाना ठीक से नहीं आता। उससे भी ज़्यादा, समझ के स्तर पर अभी काफ़ी कठिनाइयाँ हैं क्योंकि बच्चों ने पाठ ठीक से समझकर उस पर अपनी राय नहीं बनाई है या कोई नतीजा नहीं निकाला है।

- इस पाठ में बच्चों ने जो सीखा है वह बहुत सतही है। इसलिए बच्चे अर्थ निकालने में अभी सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। भाषा को बिना अर्थ निकाले पढ़ना या लिखना एक तरह से यांत्रिक है और भाषा के उपयोग की दृष्टि से असल में किसी काम का नहीं है। सभी बच्चे यदि एक ही जैसा उत्तर देते या लिखते हैं, तो यह साफ़ दिखता है कि उत्तर बच्चों की समझ से उपजने के बजाय केवल तोतारटंत है जो उन्हें आगे कहीं काम नहीं आने वाली है।

उत्तर 3 – इस उदाहरण में पाठ बच्चों की मानसिक क्षमता के लिए बहुत भारी है। इसमें इस्तेमाल होने वाली अवधारणाएँ इस स्तर के बच्चों के लिए बहुत जटिल हैं।

- जैसाकि हमने मॉड्यूल–2 में भी पढ़ा था इस तरह की जटिल व अमूर्त अवधारणाएँ समझने में बच्चों को कई साल लगते हैं जिन्हें वे केवल माध्यमिक स्तर पर समझ सकेंगे। इसलिए आप इस उदाहरण में साफ़ देख सकते हैं कि वे अभी इस पाठ को केवल सतही जानकारी के स्तर पर ही समझ सकते हैं। जानकारी

के अलग–अलग टुकड़े जो पाठक के लिए शब्दों, वाक्यों या अनुच्छेदों के पूरे अर्थ व संबंधों को स्पष्ट नहीं कर पाते, असल में पाठक को कुछ भी नया या उपयोगी नहीं सिखा पाते।

उत्तर 4 – इस उदाहरण में भी शिक्षण प्रभावी इसलिए नहीं है क्योंकि इस स्तर के बच्चों ने ढलान से बहता पानी नहीं देखा है और न ही वे आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि वन या वृक्ष किस तरह से बाढ़ को रोक पाएँगे।

- ऐसी अनेक मूर्त घटनाओं या अवधारणाओं की केवल शब्दों में जानकारी देने भर से वे बच्चे की समझ के स्तर पर नहीं आ जाती हैं जब तक कि उन्हें बच्चों के किसी ठोस अनुभव से न जोड़ा जाए। यह बात 10 साल से छोटे बच्चों के लिए और भी ज़्यादा सटीक बैठती हैं। छोटे बच्चे अनुभव द्वारा ही बेहतर सीखते हैं, जिन ठोस अनुभवों को वे समझ पाते हैं उनका ही विश्लेषण कर पाते हैं, जैसे कि किसी घटना का क्या कारण हो सकता है।

अभ्यास कार्य–1

आप अभी तक की आपनी समझ के आधार पर बताएँ, कि बच्चे कब सीख रहे हैं और कब नहीं।

सीखना यह है	सीखना यह नहीं है
----------------------------------	----------------------------------
----------------------------------	----------------------------------
----------------------------------	----------------------------------
----------------------------------	----------------------------------
----------------------------------	----------------------------------

अपना उत्तर भेजने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

3. सीखने के बारे में अभी तक की समझ

- यदि हम 'सीखने' को वर्तमान समझ के आधार पर संक्षिप्त में परिभाषित करना चाहें, तो कहा जा सकता है कि –

> ''सीखना वह प्रक्रिया है जिसके ज़रिए हम नए अनुभव लेने पर, उन अनुभवों पर अपने मस्तिष्क में सोचते हैं, और इस प्रकार नई समझ विकसित करते हैं। हम हर समय कुछ–न–कुछ अनुभव कर ही रहे होते हैं, हम हर समय सीखते रहते हैं।''

इन सब के आधार पर हम सीखने की प्रक्रिया के बारे में कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं :

I भाषा कक्षा में बच्चों को सीखने के बहुत सारे ऐसे अनुभव मुहैया कराने चाहिए जिसमें बच्चों को करने, सोचने, अपने आप को अभिव्यक्त करने, चर्चा करने, पढ़ने, लिखने आदि के मौके मिलें।

II सीखने की प्रक्रिया में बच्चे सक्रिय होने चाहिए। ऐसे में शिक्षण के दौरान एकतरफ़ा बातचीत या प्रदर्शन नहीं होना चाहिए। कक्षा की गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी और भावनात्मक जुड़ाव होना चाहिए।

III बच्चों के लिए सीखने का सबसे शक्तिशाली माध्यम मूर्त या ठोस वस्तुएँ, घटनाएँ व अनुभव हैं। अमूर्त अवधारणाएँ केवल शब्दों के ज़रिए समझना उनके लिए बहुत कठिन है।

IV अपने शब्दों में बताना या लिखना ही दर्शा सकता है कि बच्चे किसी बात को समझ पाए हैं। दूसरे के शब्दों को दोहराना समझ का सबूत नहीं है।

V सीखने में भावनाओं की बड़ी भूमिका है। यदि नकारात्मक भावनाएँ, जैसे– डर, बच्चों के मन में बस जाते हैं तो वे सीखने में बड़ी बाधा डालते हैं।

VI सीखने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है– ख़ुद के लिए अर्थ निकाल पाना या अर्थ–निर्माण है। यदि बच्चा शब्दों का मतलब नहीं समझ पाए, तो शब्दों के समुद्र में डुबोना भी उसके लिए व्यर्थ है।

VII भाषा का बाहरी स्वरूप (बोलना, लिखना, पढ़ना) तथा आन्तरिक स्वरूप (सोचना) सीखने का सबसे मुख्य माध्यम है। अनुभव भी भाषा के माध्यम से ही गहरे रूप में समझे जा सकते हैं। बिना शब्दों के, अनुभव का अर्थ बहुत सतही हो सकता है।

4. सीखने पर प्रभाव डालने वाले कारक

बच्चे कैसे सीखते हैं और क्यों नहीं सीख पाते, यह बहुत से वर्तमान और पिछले प्रभावों से तय होता है। सभी प्रभावों को लिखना मुश्किल है, लेकिन फिर भी हम आपको एक सूची नीचे दे रहे हैं :

गतिविधि–5

इनमें से वे कारक चुनें जो आपको लगता है बच्चे के सीखने पर प्रभाव डाल सकते हैं :

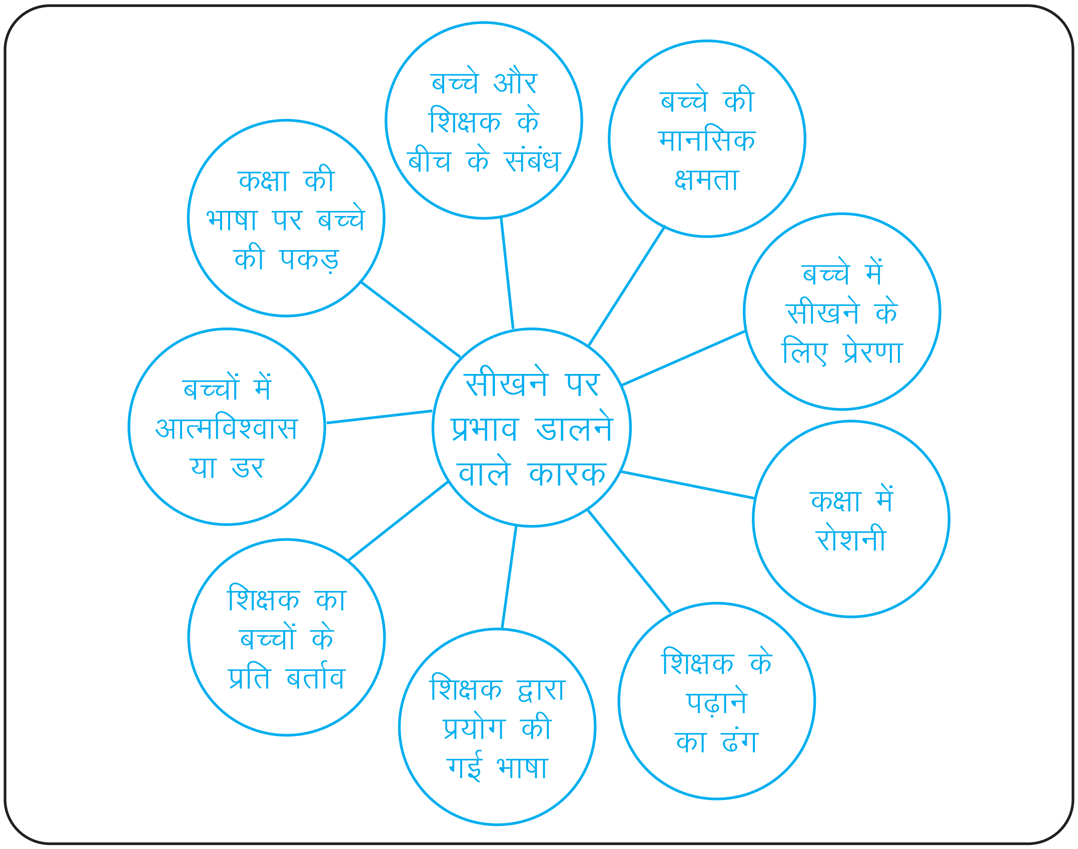

आकृति–1

हमारे अनुसार ऊपर लिखे सभी कारक सीखने पर असर डाल सकते हैं और इनमें कई कारण ऐसे हैं जिन्हें देखना आसान नहीं है। इनके अलावा भी कई अन्य कारण हो सकते हैं। कोई अन्य दो कारक नीचे लिखें –

1. ....

2. ....

इस मॉड्यूल में हम ऐसे ही कुछ प्रमुख कारकों की चर्चा करेंगे जो बच्चों के सीखने पर बहुत प्रभाव डालते हैं। हमने ऐसे कुछ सिद्धांत चुने हैं जिन्हें बहुत–से अध्ययनों में बच्चों के सीखने पर सबसे अधिक प्रभावी माना गया है। जब हम इन सिद्धांतों के बारे में पढ़ेंगे तो यह भी समझ पाएँगे कि इनके साथ शिक्षक की बहुत सी भावनाएँ और मान्यताएँ भी जुड़ी हुई हैं।

गतिविधियों के उत्तर

गतिविधि–2

सर्वे में भाग लेने वाले ज़्यादातर शिक्षकों का मानना था कि उनका मुख्य उत्तरदायित्व पढ़ाना और पाठ्यक्रम समय से पूरा करना है।

इकाई–2
सीखने–सिखाने के कुछ प्रमुख सिद्धांत और रणनीतियाँ

सुविख्यात शिक्षाविद् जॉन हॉल्ट ने एक बार छोटे बच्चों के बारे में कहा– ''उनके लिए सीखना बिल्कुल साँस लेने जितना ही स्वाभाविक है।'' जीवन के पहले 2 वर्षों में बच्चे इतनी चीजें सीख लेते हैं कि हैरानी होती है। लेकिन जब तक वे स्कूल पहुँचते हैं, हम उन्हें इस प्रकार सीखने पर मजबूर कर देते हैं जो उनके जीवन से बिलकुल जुड़ा नहीं है, अमूर्त है और जड़ है।

ज़्यादातर बच्चे, जो असल में सीखने में माहिर हैं, उस तरह नहीं सीख पाते जिस तरह हम उन्हें सिखाना चाहते हैं। स्कूल में दाखिल होने के बाद बहुत से बच्चे अक्सर निरूत्साहित व भयभीत महसूस करते हैं और उन पर 'नाकाबिल' का खिताब लगा दिया जाता है। ऐसा क्यों है? आइए, यह समझने का प्रयास करें। इसके लिए हमें सीखने के उन सामान्य सिद्धांतों को समझना होगा जो सुदृढ़ शैक्षिक वातावरण व प्रभावी शिक्षण में प्रमुख भुमिका निभाते हैं। साथ ही हमें यह भी समझना पड़ेगा कि इन सिद्धांतों को हम अपनी कक्षाओं में लागू कैसे करें।

सीखने–सीखाने के सामान्य सिद्धांत

I. कक्षा को बच्चों की दुनिया से जोड़ना
II. बच्चों के पूर्वज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल
III. बच्चे दूसरों से / के साथ सीखते हैं
IV. स्कैफोल्डिंग : सीखने में सहारा देना
V. कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण
VI. सीखने की प्रक्रिया में सभी बच्चों का जुड़ाव
VII. सोचने की प्रक्रिया के लिए मौके और प्रोत्साहन देना
VIII. विस्तारित वार्तालाप के अवसर
XI. सीखना–सिखाना और सतत आकलन

भाषा अर्जन के विशिष्ट सिद्धांत

सीखने–सीखाने के इन सामान्य सिद्धांतों के साथ ही हमे भाषा अर्जन के उन बुनियादी व विशिष्ट सिद्धांतों को भी समझना पड़ेगा जिनके जरिए बच्चे सहज ही अपनी प्रथम भाषा को हासिल कर लेते हैं। ये सिद्धांत कुछ इस प्रकार हैं :

I. भाषा किसी सार्थक व उद्देश्यपूर्ण सन्दर्भ में ही सीखी जाती है।
II. भाषा सीखने के लिए उसे सुनने और उपयोग करने के भरपूर मौके मिलने चाहिए।
III. भाषा सीखना तभी संभव है जब मुख्य उद्देश्य सम्प्रेषण हो।
IV. किसी भी अपरिचित भाषा को सीखने के लिए उसे उसी रूप में सुनने और पढ़ने के मौके मिलने चाहिए। जो कि बच्चे की समझ में आ जाए।
V. भाषा सीखते समय कक्षा का वातावरण तनाव रहित होना चाहिए।
VI. एक अपरिचित भाषा सीखने (समझने, बोल पाने या पढ़ने) के लिए उसकी शब्दावली का अच्छा ज्ञान जरूरी है।

इन सिद्धांतों की विस्तार से चर्चा हम मॉड्यूल 10 में करेंगे।

इस मॉड्यूल मे हम प्रभावी शिक्षण और सीखने के इन 9 सामान्य सिद्धांतो व रणनीतियों पर चर्चा करेंगे, जो सभी विषयों व सभी तरह के सीखने पर लागू होते हैं। यह सामान्य सिद्धांत केवल बच्चों पर ही नहीं बड़ों पर भी लागू होते हैं, लेकिन यहाँ हम उन्हें शुरुआती कक्षाओं में भाषा सीखने के सन्दर्भ में देखेंगे।

1. कक्षा को बच्चों की दुनिया से जोड़ना

> "बच्चे दिन–प्रतिदिन अपनी दुनिया के नाना अनुभव साथ लेकर स्कूल में आते हैं : वे किन–किन पेड़ों पर चढ़े, उन्होंने कौन–कौन सी चिड़िया देखीं, उन्होंने कौन–कौन से फल खाए हैं आदि। सभी बच्चे दिन और रात, ऋतुओं, पानी, पौधों एवं पशुओं के प्राकृतिक चक्र को भली–भाँति समझते हैं। इसके बावजूद (स्कूल में) हम विरले ही इस ज्ञान को सुनना चाहते हैं जो पहले से उनके पास मौजूद है, और जिसे वे रोज़ कक्षा में लेकर आ रहे हैं। अपने अध्यायों व अध्यापन के दौरान हम विरले ही बच्चों से स्कूल के बाहर की दुनिया के बारे में बात करते हैं। इसके बजाय हम पाठ्यपुस्तकों पर आश्रित होते चले जाते हैं जो कि हमारे आस–पास के प्राकृतिक जगत की एक बहुत फ़ीकी–सी नकल भर होती हैं। (एन.सी.एफ़, 2005)"

अवश्य पढ़ें– अनिवार्य पठन सामग्री में से लेख संख्या–1, शीर्षक– "कोई बच्चा बात नहीं करेगा। भाषा की कक्षा में बोलना और चुप कराना : भेद, संवाद और अधिगम के बारे में", पृष्ठ संख्या– 61

यह लेख– अज्जू, एक आठ साल के बच्चे का है जो बहुत होशियार है। यह लेख मध्य प्रदेश के एक कम–शुल्क वाले स्कूल में पढ़ने वाले अज्जू के कक्षायी अनुभवों और उसकी अध्यापिका सुनीता की केस स्टडी पर आधारित है।

गतिविधि–6

इस लेख को पढ़कर आपको किन दो मुख्य बातों की अनुभूति हुई? यहाँ लिखें –

1. ....

2. ....

उत्तर इकाई के अंत में देखें।

बहुत सारे बच्चों, ख़ासतौर से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चे स्कूल में पहुँचने से पहले आत्मविश्वास के साथ बोलते, जटिल विचारों पर बात करते और आत्मविश्वास के साथ अपने आसपास की दुनिया के बारे में पूछते और जानते दिखाई देते हैं, पर स्कूल में पहुँचने पर उनका आत्मविश्वास डोलने लगता है। ऐसे में वे चुप रहने लगते हैं या कक्षा से कटे रह जाते हैं। **इसकी एक वजह यह है कि स्कूल के पहले ही दिन से सारी ताकत पढ़ने और लिखने में झोंक दी जाती है।** बातचीत करने, ख़ासतौर से बच्चों के घर की भाषा में बातचीत करने पर रोक लगा दी जाती है। हम उसी चीज़ का निषेध करके नई शुरुआत करना चाहते हैं जो बच्चों को सबसे अच्छी तरह आती है – बातें करना। स्कूल में सीखने की शुरुआत करने का सबसे कारगर तरीका 'बात करना ' ही है। बच्चों को चुप कराकर स्कूली व्यवस्था 'नए सिरे से शुरुआत करने' को ज़्यादा तरजीह देती है।

इसके अलावा, स्कूल में दाखिल होने से पहले बच्चे जो ज्ञान और अनुभव अर्जित करते हैं, उसे औपचारिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक या उपयोगी नहीं माना जाता है। स्कूल इस मान्यता से चलता है कि सारा ज्ञान पाठ्यपुस्तक में ही होता है और बच्चों को यह बाहरी ज्ञान 'पढ़ाने' की ज़िम्मेदारी अध्यापक के ऊपर है।

हम जानते हैं कि स्कूल में सीखने की प्रक्रिया शुरू करने का एकमात्र तरीका यह है कि बच्चों की भाषाओं, परिचित सांस्कृतिक संदर्भों, तथा उनके पूर्ववर्ती ज्ञान के साथ शुरुआत की जाए।

बच्चे अपने साथ स्कूल में अपने पिछले अनुभवों की विपुल संपदा और एक ऐसी समृद्ध भाषा लेकर आते हैं जो उनके आगामी अनुभवों व नया सीखने की आधारशिला हो सकती है। यह बात सभी बच्चों के मामले में महत्वपूर्ण है मगर ऐसे बच्चों के मामले में और भी ज़्यादा अहम हो जाती है जो किसी ऐसी भाषायी एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आ रहे हैं, जो पाठ्यपुस्तकों और कक्षा शिक्षण की मुख्यधारा से उल्लेखनीय रूप से भिन्न है। मध्यमवर्गीय बच्चे (जो अब हमारे सरकारी स्कूलों में बहुत कम ही दिखाई पड़ते हैं) जब स्कूल में दाखिला लेते हैं तो वे स्कूली शिक्षा के लिए घर से ही पूरी तरह तैयार होकर आते हैं। वे पढ़ने और लिखने की पहले ही शुरुआत कर चुके होते हैं। ऐसा होने से वे प्राथमिक कक्षाओं के प्रारंभिक वर्षों में पढ़ने–लिखने की गतिविधियों का तुरंत लाभ ले पाते हैं। जिन परिवारों में पढ़ने–लिखने का माहौल नहीं होता, उन परिवारों के आने वाले बच्चों की स्थिति ऐसी नहीं होती बल्कि इस से उलट होती है। ऐसे में स्कूल में उन्हें शामिल करने और उनके सीखने के लिए ज़रूरी है कि उनकी भाषा, संस्कृति और ज्ञान के पुल का सहारा लिया जाए।

1.1 बच्चों की दुनिया और पाठ्यचर्या के शब्दों का आपस में कोई रिश्ता नहीं है

केस स्टडी–1

यह उदाहरण कन्नड़ पढ़ना सीख रहे पहली कक्षा के एक बच्चे (उम्र 5.6 साल) का है। उसके अध्यापक ने उसके सामने एक चित्र कार्ड रखा है और उसे यह बताने को कहा है कि वह तस्वीर किस चीज़ की है।[1]

शि : (तस्वीर की तरफ उंगली करके) बताओ यह क्या है?

न : "रोखा" (पैसे के लिए इस्तेमाल होने वाला स्थानीय बोली का एक शब्द)।

शि : रोखा का क्या मतलब है?धना (धन)।

न : (भ्रमित दिखता है)।

शि : धना। हम इसे कहते हैं धना।

शि : हम इसे क्या कहते हैं?

न : धना।

शि : रोखा का दूसरा नाम क्या है?

न : धना।

शि : धना।

न : धना।

शि : रोखा का मतलब है धना, यानी नोटु (नोट), मतलब... अच्छा, इसका और क्या मतलब है?

न : (अभी भी भ्रमित है)।

शि : धना... इसको क्या कहते हैं?

न : (कुछ देर तक चुप रहता है, फिर बोलता है) : दाना

शि : दना नहीं ... धना... हम इसे क्या कहते हैं?

न : (कुछ नहीं बोलता)।

शि : इसे बोलो – धना!

1. यह खंड डॉ शैलजा मेनन के लेख 'भारतीय कक्षाओं में न समझने की समस्या' से लिया गया है। डॉ मेनन टिस–हैदराबाद में अर्ली लिटरेसी इनीशिएटिव की प्रमुख हैं और इसके साथ ही वह अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में भी पढ़ा रही हैं।

न : (खामोश है)।

शि : क्या कहते हैं हम इसे?

न : (चिढ़कर कहता है) साकूरी (बहुत हुआ!)।

शि : तो ठीक है, मैं तुम्हें पेंसिल नहीं दूंगी!

शि : (हिचकिचाते हुए) धना।

जब इस कक्षा के एक बच्चे से पूछा गया कि स्कूल की किताबों में जो शब्द हैं वे उसके घर की भाषा से इतने भिन्न क्यों हैं तो उसने जवाब दिया, "क्योंकि घर में हम कन्नड़ बोलते हैं, स्कूल में हम इंग्लिश सीख रहे हैं।"

(यानी, इस बच्चे को यही पता नहीं चल पा रहा था कि स्कूल में जो कन्नड़ पढ़ाई जा रही है, वह वही भाषा है जो वह घर पर बोलता है!)

I. स्कूल में अपने पहले 6 महीनों के दौरान बच्चे ऐसे शब्द पढ़ते हैं जो आमतौर पर उनके लिए अपरिचित होते हैं, क्योंकि पहले हम बच्चों को ऐसे अक्षर सिखाते हैं जिनसे अपरिचित शब्द ही बन सकते हैं। बिना मात्रा और बिना संयुक्ताक्षरों के शब्द, छोटे बच्चों के लिए अपरिचित ही होंगे। (जैसे– बंदर की जगह वानर)

II. इसीलिए, बच्चों के दैनिक जीवन में पहले इस्तेमाल होने वाले शब्द – जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम (जैसे, अम्मा, अप्पा – पिता, तंबी – छोटा भाई, अक्का – बड़ी बहन), भोजन (जैसे, ऊटा – खाना), जगहें (जैसे, माने – घर), क्रियाएँ (जैसे, होगे – जाओ) – सभी पाठ्यचर्या से हटा दिए जाते हैं क्योंकि या तो उनमें मात्राएँ होती हैं या उनमें संयुक्ताक्षर होते हैं।

III. ज़्यादा जाने–पहचाने शब्द कक्षा एक के बजाय कक्षा दो और कक्षा तीन में ज़्यादा दिखाई पड़ते हैं क्योंकि यहाँ तक आते–आते कुछ ज़्यादा अक्षर पढ़ा दिए गए होते हैं। यानी, यहाँ ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने का क्रम ही उलटा चलता है!

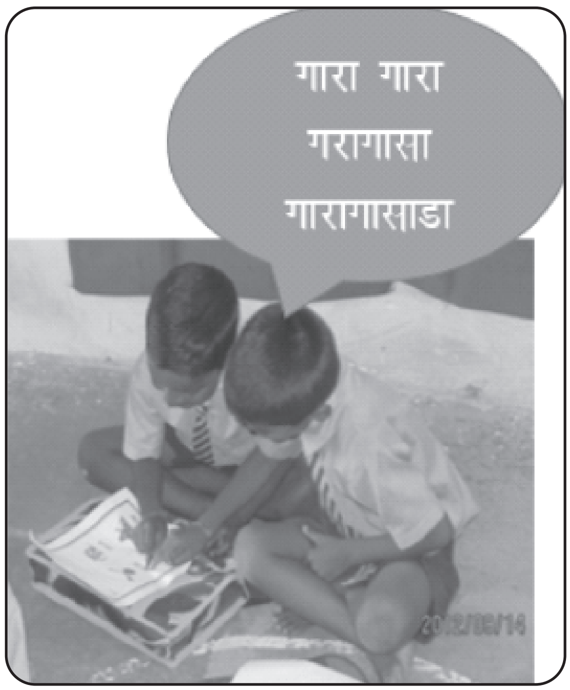

चित्र–2

"... मैंने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया है कि किसी भी साक्षरता कार्यक्रम में जो शब्द इस्तेमाल किए जाएँ वे सीखने–वालों के "शब्द जगत" से निकले हों, वे उनकी असली बोलचाल, उनकी बेचैनियों, उनके भय, उनकी चाहतों और सपने व्यक्त करते हों। ये शब्द उन लोगों के अपने अनुभवों व अर्थों से पगे होने चाहिए न कि अध्यापक के अनुभवों से"

–फ्रेरे एवं मसेडो, 1987

एक मुख्य बात यह निकलकर आती है कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को सक्रिय रूप से (विशेषकर भावनात्मक स्तर पर) जोड़ने के लिए और उनके सीखने–समझने को आसान बनाने के लिए बच्चों की परिचित दुनिया और संदर्भ को कक्षा शिक्षण से जोड़ना होगा।

अगर शिक्षक बच्चों की पृष्ठभूमि, उन्हें किन चीज़ों से लगाव है या अच्छा अनुभव है, उसे समझने का प्रयत्न करें तो वे शिक्षण को बच्चे की दुनिया से जोड़ने में काफ़ी हद तक सफल हो सकते हैं।

भाषा कक्षा के काम को बच्चों की दुनिया से कैसे जोड़ा जा सकता है? आइए, देखते हैं कि राजस्थान के एक आदिवासी बहुल क्षेत्र में क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं?

केस स्टडी–2

राजस्थान में एल.एल.एफ. द्वारा चलाई जा रही परियोजना में बच्चों की दुनिया और उससे जुड़े संदर्भों को कक्षा शिक्षण में विभिन्न प्रकार से भाामिल करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

1. डिकोडिंग सिखाने के लिए काम में लिए जा रहे शब्द अथवा बच्चों को पढ़ने के लिए दिए जा रहे पाठ बच्चों के परिवेश से पूरी तरह जुड़े हैं और अधिकतर ऐसे शब्द और वाक्य हैं, जिनसे बच्चे भावनात्मक रूप से जुड़े हुए होते हैं। जैसे– सकली (चिड़िया), तगारी (परात), खेतर (खेत), टापरा (घर), लापसी (एक प्रकार का खाद्य पदार्थ), सोका (चावल)।

   आई (माँ) खेत पर जाती है।

   सकली सोका खाती है।

2. इसके अलावा मौखिक भाषा विकास के लिए चर्चा करने के लिए प्रत्येक सप्ताह के लिए एक थीम/विषय चुना गया है जो कि बच्चों के व्यापक सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक परिवेश से ही है।

   जैसे– होली का त्यौहार, मक्के की फसल, घर और खेत, तोता और मोर, आस–पास पाए जाने वाले जानवर।

3. बच्चों को मौखिक रूप से अथवा पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानियों एवं कविताओं का संकलन भी बच्चों के परिवेश तथा उनके रोज़मर्रा के जीवन अनुभवों से ही किया गया है, चाहे वो उनके आस–पास पाए

जाने वाले पक्षियों या जानवरों की कहानी हो, त्योहारों से जुड़ी कहानियाँ हों अथवा उनके परिवेश में उपलब्ध लोक–कथाएँ हों।

हिंदी सीखने–सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा (वागड़ी) और हिंदी का उपयोग बहुत ही रणनीतिक तरीके से किया जाएगा । शुरुआत में वागड़ी का उपयोग कक्षा शिक्षण में अधिक होगा और कक्षा 2 और 3 में हिंदी का उपयोग बढ़ेगा लेकिन ज़रूरत के अनुसार वागड़ी का उपयोग ज़ारी रहेगा ।

2. बच्चों के पूर्वज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल

अक्सर यह माना जाता है– बच्चे तो खाली बरतन की तरह हैं, जिनमें ज्ञान भरा जाना चाहिए। अध्यापक को स्कूल में नए सिरे से शुरू करना है।

बच्चे अपने साथ कक्षा में ज्ञान, अनुभव व मौखिक भाषा–कौशलों की एक संपदा लेकर आते हैं, जिसका इस्तेमाल नए ज्ञान–अर्जन के लिए किया जा सकता है। यह संपदा उनके परिवारों, उनके आस–पास के प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण (लोग, लोक–व्यवहार, भाषा, मौसम, फल–फूल, सब्ज़ी, पेड़–पौधे और जानवर आदि) से संबंधित होती है। हमने मॉड्यूल 2 की इकाई 3 में देखा था कि ज़्यादातर कक्षाओं में इन अनुभवों को ख़ास महत्व नहीं दिया जाता है और उन्हें 'स्कूली ज्ञान' के विकास के लिए उपयोगी नहीं माना जाता है।

केस स्टडी–3

आइए, एक उदाहरण देखते हैं। एक शिक्षिका पाठ पढ़ा रही हैं–

"जब मुझको साँप ने काटा" (एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक रिमझिम कक्षा–3) वे पहले पाठ का शीर्षक ज़ोर से पढ़ती हैं। फिर कहती हैं कि– "अच्छा बताओ किस–किस ने साँप देखे हैं?" तुरंत ही कक्षा के कई बच्चों के चेहरों पर चमक आ जाती है, और पाँच–छह बच्चे उत्साहित होकर बोलते हैं– "मैंने"। शिक्षिका उनमें से दो बच्चों को अपना अनुभव सुनाने को कहती हैं। फिर दूसरे बच्चों से पूछती हैं– "क्या तुम्हारे घर के आस–पास कभी साँप निकला है?" कई और बच्चे अपने परिवार से सुने हुए किस्से बताने को उत्सुक हैं। जैसे–जैसे पाठ आगे बढ़ता है वे ऐसे सवाल पूछती हैं जिससे बच्चों को साँपों के बारे में जो कुछ पता है, उन्हें बताने का अवसर मिले। यदि नहीं, वे यह भी देखने की कोशिश करती हैं कि बच्चे साँपों से कितना डरते हैं। पाठ जब आगे बढ़ता है और बर्र की बात आती है, तो वे ख़ास करके उन बच्चों को बोलने का मौका देती हैं जिन्होंने पहले नहीं बोला। वे ऐसे कई सवाल पूछती हैं–

1. तुमने बर्र कहाँ देखा है?
2. बर्र का छत्ता कैसा होता है?
3. क्या तुम्हारे घर में किसी को बर्र ने काटा है?

4. काटने पर घरवालों ने क्या किया?
5. किस–किस के नाना–नानी गाँव में रहते हैं?
6. किसने धान के खेत देखे हैं? उनकी क्या ख़ास बात होती है? आदि।

यह देखा जा सकता है कि बच्चों के पास ऐसी बातों पर बहुत–सा अनुभव और ज्ञान होता है। यदि बच्चों को उनके पूर्वज्ञान को बताने का मौका दिया जाए तो बच्चों को कक्षा में शामिल करने और विषय के बारे में उत्सुक या उत्साहित करने में बहुत आसानी होगी। यही नहीं, बच्चों के पास उपलब्ध पूर्वज्ञान बहुत अच्छी 'हुक' है, जिसके साथ इस पाठ पर आगे होने वाले सारे शिक्षण को जोड़ा जा सकता है।

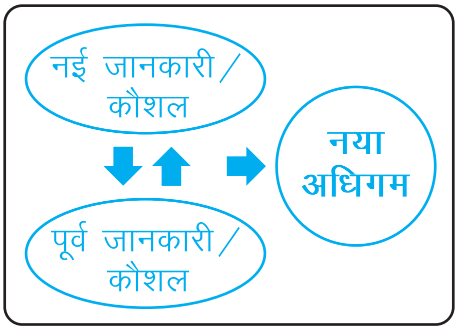

आकृति–2

नई सूचनाओं और अनुभवों को मौजूदा ज्ञान व अनुभवों के साथ जोड़ने पर ही नया ज्ञान–अर्जन होता है। किसी के लिए भी ऐसी कोई चीज़ समझना, याद रखना या सीख लेना संभव नहीं है जो उसके लिए पूरी तरह अपरिचित हो।

मगर, अच्छी समझ बनाने के लिए यह भी ज़रूरी है कि बच्चे अपने पूर्वज्ञान को सक्रिय करें ताकि समझने और सीखने के लिए उसका प्रयोग किया जा सके। शोधों से पता चलता है कि बच्चे हर बार अपने पूर्वज्ञान और नए ज्ञान के बीच संबंधों को नहीं देख पाते। शोध यह भी बताते हैं कि जब अध्यापक बच्चों के पूर्वज्ञान पर करीब से ध्यान देते हैं और शिक्षण के लिए उस ज्ञान को एक प्रस्थानबिंदु के रूप में प्रयोग करते हैं तो सीखना ज़्यादा प्रभावी हो जाता है।

यहाँ यह समझना भी ज़रूरी है कि **हर बच्चे के पूर्व अनुभव और ज्ञान अलग–अलग हो सकते हैं और इसलिए उनकी धारणाएँ भी भिन्न हो सकती हैं। उनके मौजूदा दृष्टिकोण उनके नए ज्ञान–अर्जन पर काफ़ी प्रभाव भी डालते हैं।** आइए, देखें कैसे–

उदाहरण के लिए चार बच्चों को देखते है जो तोतों के एक झुंड को देख रहे हैं :

आकृति–3

हमारे दृष्टिकोणों में इतना अंतर होता है, क्योंकि हमारे पिछले अनुभव अलग–अलग होते हैं और जीवन का ज्ञान भी। इसलिए किसी भी नई परिस्थिति को देखने पर हम उसकी व्याख्या अपने ख़ास व्यक्तिगत ढंग से करते हैं, जो हमेशा हमारे मौजूदा ज्ञान और पिछले अनुभव के अनुसार होती है। ऊपर दिखाए उदाहरण में हम देख सकते हैं कि किसी बच्चे का तोतों के बारे में अनुभव अच्छा नहीं है। यह भी हो सकता है कि उसके आस–पास लोगों ने उसके मन में तोतों के बारे में ये धारणाएँ पैदा कर दी हैं। इसके विपरीत कोई दूसरा बच्चा या तो अच्छे अनुभव के कारण या पुराने प्रभावों के कारण तोतों के बारे में बेहतर धारणा रखता है। यदि ये चारों बच्चे तोतों के बारे में कोई कविता या पाठ पढ़ेंगे, तो वे अपनी पुरानी दृष्टि के अनुसार ही पाठ का अर्थ निकालेंगे और ज्ञान को आगे बढ़ाएँगे। इसे आकृति–4 के द्वारा समझा जा सकता है।

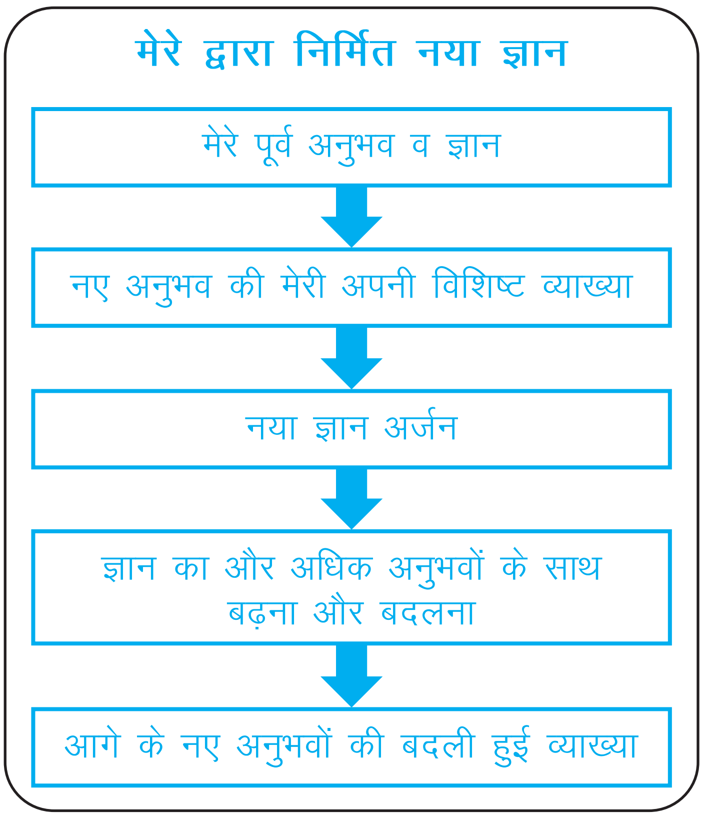

आकृति–4

2.1 बच्चों के पूर्वज्ञान का शिक्षण में प्रयोग

जैसी ऊपर चर्चा की गई है, बच्चों के पूर्वज्ञान को शिक्षण में इस्तेमाल करने के तीन मुख्य पहलू होते हैं–

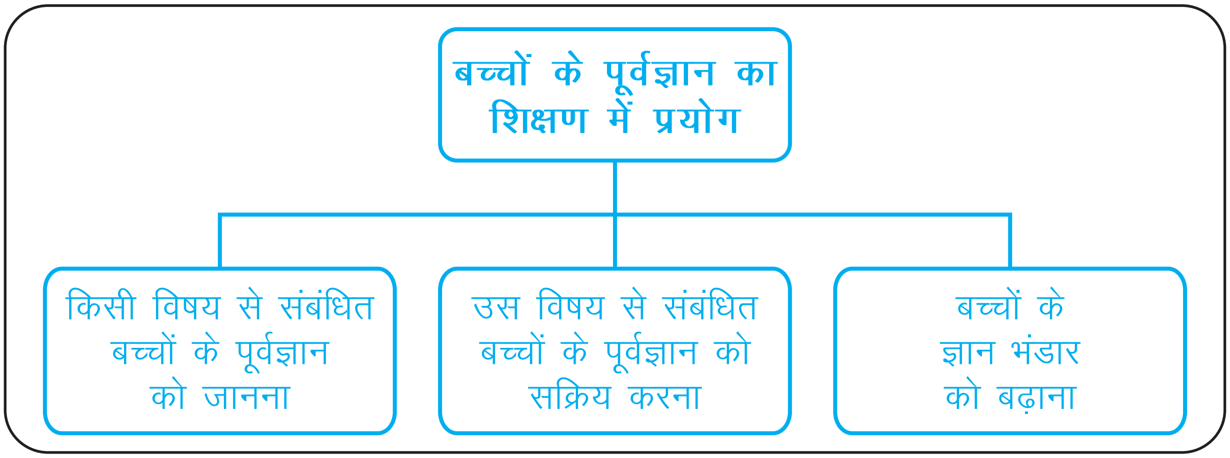

आकृति–5

बच्चों के पूर्वज्ञान को सक्रिय करने व इस्तेमाल करने के लिए अध्यापक कई तरीके अपना सकते हैं :

I. किसी विषय से संबंधित बच्चों के पूर्वज्ञान को जानना

(i) **किसी विषय पर बच्चों के मौजूदा अनुभव और विचारों का पता लगाना :** इसके लिए शिक्षिका विषय शुरू करने से पहले बच्चों को अपनी राय देने के अवसर दे सकती हैं। इससे शिक्षिका बच्चों के सोचने का स्तर जान सकती हैं और वहीं से पाठ आगे ले जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, 'यात्रा' पर पाठ शुरु करने से पहले बच्चों के अनुभवों को पूछने से यह पता लग सकता है कि कितने बच्चे अपने इलाके के कभी बाहर गए हैं? या नहीं? वे यात्रा के साधनों के बारे में कितना जानते हैं? इत्यादि।

(ii) **नए अनुभव देते समय अध्यापक यह जाँच कर सकते हैं कि बच्चे उसका क्या अर्थ निकाल रहे हैं :** उदाहरण के लिए यदि अध्यापक बच्चों से कहते हैं कि कश्मीर बहुत दूर है तो उन्हें यह पूछकर देखना चाहिए कि बच्चे बहुत दूर किसकी तुलना में सोच रहे हैं। जैसे– अगले गाँव, राज्य का कोई अन्य शहर जितना दूर आदि। अध्यापक बच्चों से ऐसे सवाल पूछें जिससे वे जो पढ़ने जा रहे हैं और जो पहले से जानते हैं, उन दोनों के आपसी संबंधों को समझ सकें।

II. उस विषय से संबंधित बच्चों के पूर्वज्ञान को सक्रिय करना

(i) कक्षा की प्रक्रिया में स्थानीय लोक कथाएँ, पहेलियाँ और गीत शामिल करें।

(ii) **पुनरावृत्ति** : जिस विषय को शुरू करने जा रहे हैं, उसको समझने के लिए आवश्यक उन अवधारणाओं को दोहरा लें (रिवीज़न); जिन्हें बच्चे पहले भी पढ़ चुके हैं।

(iii) **पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को आसपास की दुनिया से जोड़ना** : इसके लिए अध्यापक बच्चों के साथ बाहर घूमने (नेचर वॉक) पर जा सकते हैं, कंकड़–पत्थर और पत्तियाँ इकट्ठी कर सकते हैं, बच्चों को घर में या बाहर किसी चीज़ का अवलोकन करने के लिए कह सकते हैं; उन्हें गाँव के बुजुर्गों से गाँव के बारे में जानकारियाँ इकट्ठी करने के लिए कह सकते हैं और इन सभी चीज़ों को कक्षा की गतिविधियों में इस्तेमाल कर सकते हैं। इन गतिविधियों से स्कूल की दुनिया और बच्चों या स्थानीय समुदाय की दुनिया का फ़ासला पाटने में मदद मिलेगी।

III. बच्चों का ज्ञान भंडार बढ़ाना

(i) आरंभिक वर्षों में, जबकि बच्चों का पढ़ने का अनुभव और सामान्य ज्ञान ज़्यादा विस्तृत नहीं है, ऐसे में **शिक्षक द्वारा नई बातें पढ़कर सुनाने** से और कक्षा में जानकारियों के ऊपर बातचीत करने से बच्चों का सामान्य–ज्ञान बेहतर होता है।

(ii) **शिक्षक बच्चों को नए अनुभव दे** सकते हैं, जिस पर उनका आगे का ज्ञान निर्मित होगा। उदाहरण के लिए, अगर बच्चों ने कभी साभिनय गीत या कविता पाठ नहीं किया है, तो कक्षा में ऐसा करने से बच्चों को यह पता लगेगा कि ऐसा करना कितना मज़ेदार होता है।

(iii) **शिक्षक बच्चों को मदद देते हैं,** जिससे बच्चों के मन में बैठी हुई धारणाओं या समझ को ज़्यादा विस्तृत किया जा सके या बदला जा सके। उदाहरण के लिए, पाठ में लिखा है कि ''सूरज की गर्मी से पानी भाप बनकर उड़ जाता है।'' यह संभव है कि बच्चे के लिए यह कल्पना करना बहुत मुश्किल हो कि नदी या तालाब का पानी कैसे हवा में उड़ेगा। ऐसे में गर्म चाय या गर्म पानी मँगाकर, उसमें से निकलती भाप दिखाकर शिक्षक बच्चों की समझ को बेहतर बना सकते हैं। उन्हें यह स्पष्ट करना होगा कि चाय से निकलती भाप पानी का एक भिन्न रूप है और केवल 'धुआँ' नहीं है।

(iv) **शिक्षक बच्चों की मौजूदा समझ को चुनौती भी दे सकते हैं** बच्चे जब स्कूल आते हैं तो अपने आस–पास की दुनिया को समझने के लिए वे पहले से ही अनेक सिद्धांत गढ़ चुके होते हैं अथवा उनके पास अपने नियम होते हैं। ये सिद्धांत उन्होंने दुनिया के अपने अवलोकनों के आधार पर बनाए होते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे अपनी समझ के आधार पर सजीव और निर्जीव वस्तुओं में अंतर करते हैं। कुछ बच्चे मानते हैं कि जो वस्तुएँ चल सकती हैं, वे सजीव हैं और जो नहीं चल सकतीं, वे निर्जीव हैं। इसीलिए पेड़–पौधे निर्जीव हैं क्योंकि वे चल नहीं सकते और मोटर साइकिल सजीव है क्योंकि वह चल सकती है। यदि बच्चा यह समझ रहा है कि पेड़–पौधे ज़िंदा नहीं होते, तो शिक्षक पूछ सकते हैं कि क्या निर्जीव चीज़ को खाने या पानी की ज़रूरत होगी और क्या वह धीरे–धीरे बड़ी हो सकती है?

3. बच्चे दूसरों से / के साथ सीखते हैं

प्रसिद्ध रूसी मनोवैज्ञानिक लेव वाईगोत्स्की ने सीखने की प्रक्रिया में अन्य लोगों की भूमिका को बहुत महत्व दिया। उनका मानना था कि बच्चों के सीखने का मुख्य तरीका एक अधिक जानकारी वाले व्यक्ति के साथ अंतःक्रिया करने से होता है। यह व्यक्ति शिक्षक हो सकता है या फिर कोई अन्य वयस्क या दूसरे बच्चे भी हो सकते हैं। ज़्यादा जानकार व्यक्ति से अंतःक्रिया करने का अर्थ है उसके सहयोग से, मार्गदर्शन से और मिल–जुलकर काम करना।

इस तरह से, दूसरे से सीखने से जो बच्चा अभी जानता है और नए ज्ञान के बीच संबंध बन पाता है। इसे हम स्कैफ़ोल्डिंग भी कहते हैं। इसके बारे में हम अगले खंड में पढ़ेंगे।

वाईगोत्स्की ने यह एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण हमें दिया :

दूसरों के साथ की हुई चर्चा और बहस ही असल में बाद में मन के अंदर होने वाले चिंतन और तर्क–वितर्क की बुनियाद बनती हैं। जब तक किसी शिक्षार्थी को दूसरों के साथ चर्चा करने का मौका नहीं मिलेगा, तब तक वह अपने मन में तर्क करना भी नहीं सीख पाएगा।

चित्र–3

3.1 कक्षा के शिक्षण के लिए इसका अर्थ है

I. **सीखने के लिए कक्षा में बातचीत और दूसरों से अंतःक्रिया करना बहुत ज़रूरी है।** इसमें दोनों तरह की बातचीत शामिल है :

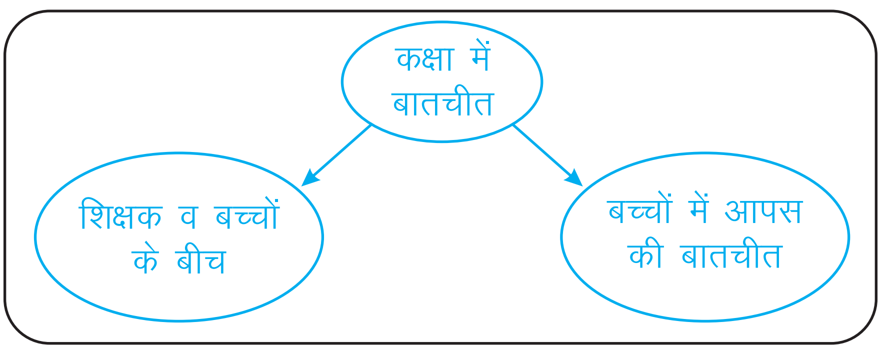

आकृति–6

बच्चे नीचे दिखाई जा रही सभी तरह की बातचीत के ज़रिए सीखते हैं।

बच्चा ↔ बराबरी का दूसरा बच्चा

बच्चा ↔ दूसरा बड़ा बच्चा

बच्चा ↔ वयस्क

II. **कक्षा में, छोटे समूहों में काम कराना बहुत लाभकारी है।** यहाँ पर खुलकर साथ में काम करने और बात करने का अवसर मिलता है। मनोवैज्ञानिकों ने पाया है कि बच्चे या सभी लोग एक–दूसरे से बहुत ज़्यादा सीखते हैं। कुछ चिंतक तो यहाँ तक कहते हैं कि सारा ज्ञान अलग–अलग तरह की साझी समझ बनने से ही विकसित होता है।

4. स्कैफ़ोल्डिंग : सीखने में सहारा देना

बच्चे ज़्यादातर दूसरों से सीखते हैं। वह भी उन लोगों से जो बच्चे के मौजूदा स्तर से थोड़ा–सा आगे हों, चाहे वे दूसरे बच्चे हों या फिर वयस्क। वे दूसरों के काम देखते हैं, निर्देशों का पालन करते हैं, और दूसरों के साथ काम करते–करते सीखने के अगले स्तर तक बढ़ते जाते हैं।

यदि इसे शिक्षण की दृष्टि से देखें तो शिक्षक के लिए यह जानना ज़रूरी होता है कि बच्चे अभी क्या करने के काबिल हैं ताकि शिक्षक उन्हें सही सहारा और अवसर दे सकें।

गतिविधि–7

बच्चे को शैक्षिक काम देने के विषय में सोचें कि इन तीनों स्थितियों में कौन–सी स्थिति सबसे बेहतर है और क्यों?

1. काम बच्चे को पहले से आता है और उसके लिए आसान है।
2. जब काम बच्चे के मौजूदा स्तर से कुछ ज़्यादा चुनौती पेश करता है।
3. जब कार्य बच्चे के मौजूदा स्तर से बहुत ज़्यादा चुनौती पेश करता है।

ज़ाहिर है कि बहुत आसान काम में बच्चा कुछ नया नहीं सीखेगा। हो सकता है उसे मज़ा भी न आए क्योंकि यह कार्य उसे आगे बढ़ने के लिए उकसाता नहीं है। निरंतर सीखे हुए के दोहराव से बच्चा ऊब भी सकता है। यदि

काम बहुत कठिन है वह बच्चे को शुरू से ही हतोत्साहित कर देगा और बच्चे का अपने ऊपर भरोसा नहीं बन पाएगा। केवल थोड़ी चुनौती वाला स्तर ही बच्चे को कुछ हासिल कर पाने की प्रेरणा और आत्मविश्वास दे पाएगा।

हम अक्सर किसी बच्चे के स्तर को केवल उसी से आँकते हैं जो कि वह बच्चा अपने आप कर सकता है। इम्तिहान में भी हम केवल इस स्तर को ही जाँचते हैं। लेकिन, असल में दूसरे की मदद से बच्चा इस स्तर से कहीं अधिक आगे जाने की क्षमता रखता है। इन दोनों क्षमताओं में अंतर को ही ज़ेड.पी.डी. या 'ज़ोन ऑफ प्रॉक्सिनल डेवलपमेंट' (Zone of Proximal Development) नाम दिया गया है। शब्दशः इसका अर्थ है– 'विकास का निकटवर्ती क्षेत्र'। ज़ेड.पी.डी. की कल्पना लेव वाईगोत्स्की ने 1930 के दशक में की थी। यह अवधारणा इन दो बातों पर ज़ोर देती है – (1) हम तभी कुछ नया सीख पाते हैं, जब नया ज्ञान/कौशल हमारे मौजूदा स्तर के समीप या निकट हो। (2) यह हम किसी दूसरे की सहायता से कर पाते हैं जो हमसे कुछ ज़्यादा जानता है। वह चाहे हमारा साथी हो सकता है अथवा शिक्षक।

ज़ेड.पी.डी. को इस चित्र से समझना आसान होगा–

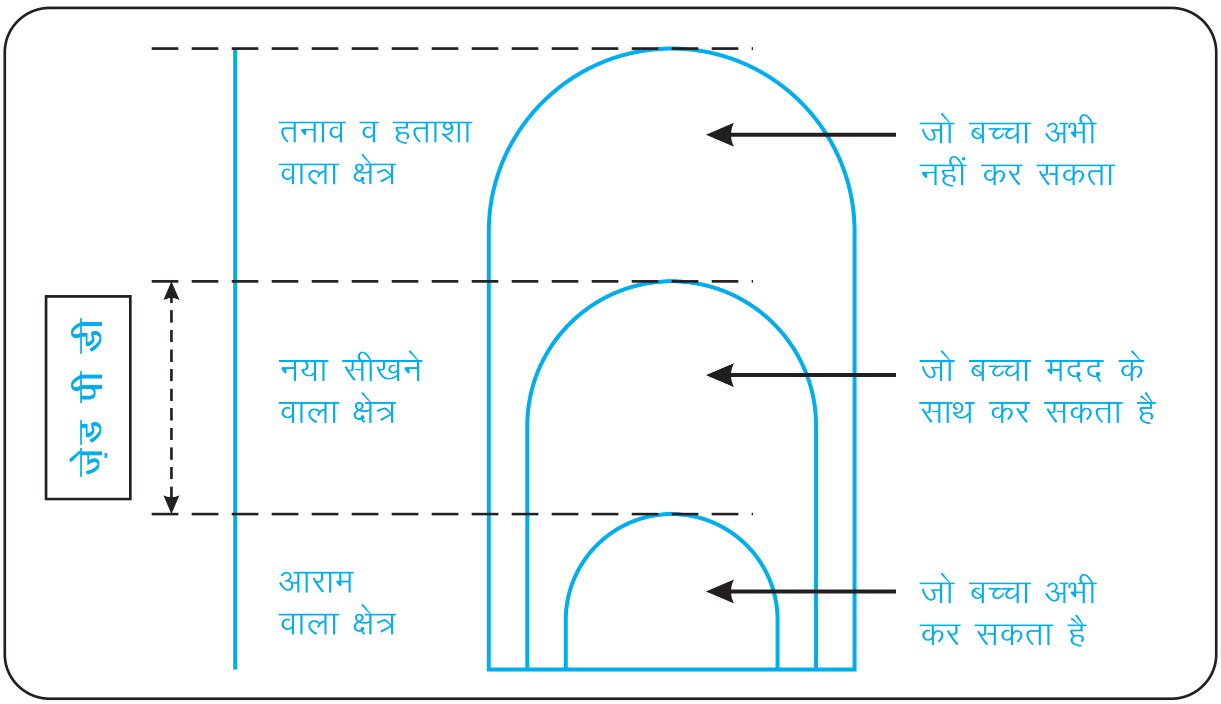

आकृति–7

शिक्षक के लिए ज़ेड.पी.डी. यह महत्वपूर्ण संदेश देता है कि सहायता का स्तर उसे बच्चे की मौजूदा स्तर के नज़दीक रखना पड़ेगा।

जो बच्चा अभी नहीं कर सकता → **हताश करने वाला ज़ोन :** जिसमें जो सिखाया जा रहा है, वह बच्चे के स्तर से कहीं ऊपर है।

ज़ेड.पी.डी.
बच्चा, जो दूसरे की मदद मिलने पर कर या समझ सकता है। → **सीखने का ज़ोन :** जिसमें बच्चा थोड़ी मदद से नई चीज़/कौशल सीख सकता है।

बच्चा जो अपने आप कर या समझ सकता है। → **आराम का ज़ोन :** जिसमें बच्चा कुछ नया नहीं सीख रहा, केवल जो जानता है उसका अभ्यास कर पा रहा है।

आकृति–8

> “ बच्चा आज जो किसी की मदद से कर रहा है, कल ख़ुद स्वतंत्र रूप से कर पाएगा ”

4.1 स्कैफ़ोल्डिंग : कुछ नया सीखने के लिए ज़रूरत अनुसार सहारा/मदद

केस स्टडी–4

आइए, एक तीसरी कक्षा की ओर देखते हैं। शिक्षिका सीमा ने बच्चों को आधे अक्षरों के बारे में बताया। उन्होंने बच्चों को कुछ उदाहरण दिए। जैसे बच्चा, कुल्फी, मुक्का, पिल्ला आदि। उन्होंने बताया कि जिस भी अक्षर की ध्वनि बहुत थोड़ी आ रही है, वे आधे अक्षर हैं। उन्होंने कुछ आधे अक्षर बोर्ड पर लिख कर दिखाए। फिर बच्चों से कहा कि अब इन शब्दों को अपनी कॉपी में लिखे– कच्चा, हल्का, हल्दी, पक्का आदि। ज़्यादातर बच्चे एक भी शब्द सही नहीं लिख पाए। ऐसे में उन्होंने सारे शब्द बोर्ड पर लिखकर, उन्हें कॉपी में उतारने के लिए बच्चों को कहा। साथ ही संयुक्ताक्षर वाले कई नए शब्द भी दिए।

गतिविधि–8

आपके अनुसार इस केस स्टडी–4 में बच्चे शब्दों को क्यों नहीं लिख पाए? नीचे दिए गए विकल्पों में से वे चुनें जो आपको ठीक लगते हैं :

1. अध्यापिका ने बच्चों को काफ़ी अभ्यास नहीं दिया।
2. उन्होंने बच्चों को बहुत सारे उदाहरण नहीं दिए।
3. अध्यापिका बच्चों को उनके स्तर से कहीं ऊपर का काम दे रही थीं।
4. अध्यापिका ने ध्वनियों को बार–बार तोड़कर बच्चों को आधे अक्षर की ध्वनि समझने का मौका नहीं दिया।
5. वे बच्चों के समझ के स्तर को जाँचने का प्रयास नहीं कर रही थीं।

उत्तर इकाई के अंत में देखें।

आधे अक्षरों को शुरुआत में समझ पाना बच्चों के लिए काफ़ी कठिन है और बच्चों को समझने के लिए जब तक थोड़ा–थोड़ा करके सहारा न दिया जाए तब तक वे इसे नहीं पकड़ सकेंगे। यही नहीं, शिक्षिका को यह जाँचना भी ज़रूरी है कि बच्चों का वर्तमान स्तर क्या है और क्या वे सिखाई गई नई अवधारणा समझ सके हैं?

आपने इमारतों के निर्माण के समय उनके चारों ओर लगाए गए बाँस आदि के ढाँचे या पाड़ को देखा होगा। जब इमारत कच्ची होती है तो उसे इस ढाँचे का सहारा ज़रूरी होता है, वरना वह अपने आप खड़ी नहीं हो पाएगी तथा ढह जाएगी।

इसी उपमा को शिक्षण में 'स्कैफ़ोल्डिंग' का नाम दिया गया है।

चित्र–4

यह वह सहारा या मदद है जो शिक्षक द्वारा बच्चों को लगातार देनी होती है, जब वे कोई नया ज्ञान या कौशल सीख रहे हों। इसमें यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों का जो वर्तमान स्तर है उससे कुछ ऊपर के स्तर की चुनौती बच्चों को दी जाय (जेड़.पी.डी.)

यदि वे इस थोड़ी चुनौती को पार कर सकेंगे, तभी उनमें यह आत्मविश्वास बन पाएगा कि यह कार्य उनके करने लायक है। उनमें चुनौती को स्वीकार करने लायक प्रेरणा भी होगी और पूरा कर लेने पर आगे बढ़ने का उत्साह भी।

कोई भी नया ज्ञान या कौशल अर्जन इस अति आवश्यक सहारे या स्कैफ़ोल्डिंग के बिना नहीं होता, और यह प्रभावी शिक्षण का एक ज़रूरी हिस्सा है।

यह मदद अध्यापक, किसी वयस्क अथवा अधिक सक्षम सहपाठी द्वारा बच्चों को उपलब्ध कराया जाने वाला एक अस्थायी मार्गदर्शन या सहयोग होता है। इस मार्गदर्शन अथवा सहयोग के बिना स्वतंत्र रूप से बच्चे उस काम को करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह मार्गदर्शन बच्चों की क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से दिया जाता है, ताकि आगे जाकर बच्चा उस काम को स्वयं ही स्वतंत्र रूप से करने लगे।

4.2 स्कैफ़ोल्डिंग का शिक्षा में प्रयोग

हम जानते हैं कि कक्षा में बच्चे सीखने के विभिन्न चरणों या स्तरों पर होते हैं। असल में आदर्श स्थिति वह है जब हर बच्चे को अपने स्तर के अनुसार सहारा या शिक्षण मिल सके। इसके बारे में हम आगे के एक मॉड्यूल में बात करेंगे। लेकिन यह हमेशा संभव नहीं होता है। पर यह बेहद ज़रूरी है कि अध्यापक बच्चों के पूर्वज्ञान व कौशल की जानकारी रखते हों और बच्चों को मदद देने के लिए स्कैफ़ोल्डिंग की विभिन्न तकनीकों का इस्तेमाल कर सकें।

स्कैफ़ोल्डिंग के कुछ तरीके

I. छोटे–छोटे आसान चरणों में तोड़कर पढ़ाया जाए। उदाहरण के लिए, किसी बड़े पाठ की पहले टुकड़ें में चर्चा की जाए। फिर बाद में, उनको एक साथ लाते हुए पूरे पाठ की समझ को सामने रखा जाए। पाठ शुरू करने से पहले शिक्षक कठिन शब्दों का अर्थ बता सकते हैं, ताकि पाठ पढ़ने के दौरान बच्चों को अर्थ निकालने में मदद मिल सके।

II. बच्चों के पूर्वज्ञान को सक्रिय करके नए पाठ को उससे जोड़ा जाए। इसके लिए बच्चों से पूछा जा सकता है कि वे इस विषय के बारे में क्या जानते हैं। ऐसे किसी 'हुक' का प्रयोग जो नए–ज्ञान को पूर्वज्ञान से जोड़ता हो, स्कैफ़ोल्डिंग का अच्छा तरीका है। नए पाठ को पहले पढ़े पाठों से भी जोड़ा जा सकता है। बच्चों से पूछा जा सकता है कि वे इस विषय को अपने दैनिक जीवन में कहाँ देखते हैं।

III. अगर शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को स्कूल की भाषा की समझ बहुत कम हो तो बच्चों की भाषा का प्रयोग (अध्यापक और बच्चों द्वारा) एक स्कैफ़ोल्डिंग के रूप में काम करता है, जिसकी मदद से वे स्कूल की भाषा समझना और सीखना आरंभ कर सकते हैं। प्रथम भाषा का कितना प्रयोग किया जाए, यह परिस्थिति पर निर्भर करता है। शिक्षिका को पूरे पाठ का अनुवाद करना ज़रूरी नहीं। वे केवल कठिन शब्दों या अवधारणाओं के लिए प्रथम भाषा का प्रयोग कर सकती हैं या फिर बच्चों को चर्चा करने या अपनी बात कहने के लिए प्रथम भाषा के प्रयोग के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

4.3 सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमश: बच्चों को सौंपना/जी.आर.आर. (Gradual Release of Responsibility/G.R.R.)

कक्षा में बच्चों को स्कैफ़ोल्डिंग देने का एक प्रभावी तरीका जी.आर.आर. है। इसमें शिक्षक सीखने की ज़िम्मेदारी धीरे–धीरे बच्चों को सौंपते हैं। यह प्रक्रिया नीचे दिए गए चरणों में होती है–

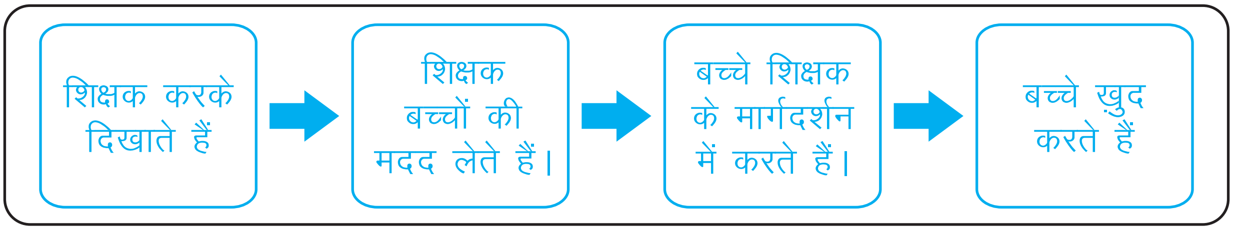

आकृति–9

इसे एक उदाहरण के ज़रिए समझते हैं :

केस स्टडी–5

एक शिक्षिका ज्योति बच्चों को कहानी वाला पाठ पढ़ा रही हैं। यह पाठ 5.7 दिनों तक चलता है।

सबसे पहले वे कहानी को सजीव अभिनय और हाव–भाव के साथ सुनाती हैं ताकि बच्चों की रुचि जग जाए। यह 'करके दिखाने' वाला चरण है।

अब वे कहानी का एक–एक छोटा अंश पढ़ती हैं। बीच–बीच में रुक कर वे बच्चों से शब्दों के अर्थ पर बात करती हैं, उनसे प्रश्न पूछती हैं ताकि जाँच सकें कि बच्चों ने कितना समझा है। बच्चों से यह भी अनुमान लगाने को कहती हैं कि अब आगे क्या होगा। इस चरण में कक्षा में खुलकर मज़ेदार बातचीत होती है। इसमें बच्चे अपनी राय भी रखते हैं और यह भी बताते है कि उन्हें कहानी के पात्र या घटना कैसे लगे।

इसके बाद वे बच्चों से जोड़ों में पढ़ने के लिए कहती हैं। बच्चे एक–एक पंक्ति करके पढ़ रहे हैं और वे कक्षा में घूमकर पढ़ते हुए देख व सुन रही हैं। बीच–बीच में रुक कर आवश्यकता अनुसार किसी–किसी बच्चे की मदद भी करती हैं। अब वे बच्चों से कहती हैं कि कहानी को धीमी आवाज़ में ख़ुद ही पढ़ें। अगर कहीं समस्या हो तो रुक कर अपने साथी/जोड़ीदार बच्चे से पूछें। पूरी कक्षा बच्चों की आवाज़ों की गुनगुनाहट से सजीव है।

जब बच्चे कहानी पढ़ चुके होते हैं, वे बच्चों से कहानी को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहती हैं। वे एक–एक करके बच्चों को थोड़े–थोड़े अंश ज़ोर से सुनाने देती हैं। इसके बाद वे कक्षा को चार–चार के समूह में बाँट देती हैं, और समूह चर्चा के लिए कुछ खुले छोर वाले प्रश्न देती हैं। एक बार फिर कक्षा बच्चों की उत्साहित बातीचीत से भर जाती है। अंत में, वे बच्चों से कहती हैं कि अपनी अभ्यास–पुस्तिका में कहानी पर आधारित एक चित्र बनाएँ और ख़ुद लिखने की कोशिश करें।

उपर्युक्त वर्णन में हम चार चरण पहचान सकते हैं :

I. **वांछित कौशल का नमूना (मॉड्ल) दिखाना :** इस चरण में जो भी नए कौशल सिखाए जाने हैं, उन्हें शिक्षक द्वारा नमूने के रूप में दर्शाया जाना चाहिए ताकि बच्चे अच्छी तरह देख सकें कि वह काम कैसे किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, किसी पाठ को समझने का तरीका भी दर्शाया जा सकता है। जैसे– शिक्षिका पाठ को ज़ोर से पढ़ते–पढ़ते, बीच–बीच में अपनी सोचने की प्रक्रिया को भी बोलकर बच्चों को दिखा सकती हैं।

II. **शिक्षक और बच्चे मिलकर :** शिक्षिका बच्चों के साथ मिलकर वह काम करती हैं, ऐसा करते हुए बीच–बीच में वे बच्चों से योगदान ले लेती हैं।

III. **बच्चों द्वारा शिक्षक के मार्गदर्शन में :** इसके बाद शिक्षिका बच्चों को उस कौशल को लागू करने का अवसर देती हैं, जिसमें वे लगातार साथ–साथ आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी देती हैं। मार्गदर्शन के साथ अभ्यास असल में स्कैफ़ोल्डिंग का सबसे प्रमुख तरीका है।

IV. **स्वयं बच्चों द्वारा :** इस प्रकार मदद के साथ कौशल विकसित करने का पूरा मौका और अभ्यास देने के बाद शिक्षिका उसे खुद करने की ज़िम्मेवारी बच्चों पर सौंपती हैं। यहाँ पर भी आवश्यकता के अनुसार बच्चों को जोड़ों या समूहों में कार्य करने लिए दिया जा सकता है। साथ ही शिक्षिका यह भी परखती रह सकती हैं कि बच्चे कार्य में कितने सक्षम हुए हैं और कितने आराम से उसे कर पा रहे हैं।

इस रणनीति के तहत कक्षा में किए जाने वाले कामों को धीरे–धीरे तथा जान–बूझकर अध्यापक से हटाकर अध्यापक और बच्चों के बीच संयुक्त ज़िम्मेदारी की ओर, फिर संयुक्त ज़िम्मेदारी से बच्चे के द्वारा स्वतंत्र अभ्यास और उपयोग की ओर ले जाना होता है। यह रणनीति अध्यापक को इस अपेक्षा से कि ''सारा काम करने की ज़िम्मेदारी मेरी है'' से आगे बढ़कर ''बच्चे सारी ज़िम्मेदारी ले रहे हैं'' की स्थिति तक पहुँचाती है। ज़िम्मेदारियों का यह क्रमशः हस्तांतरण एक दिन में हो सकता है, एक सप्ताह में हो सकता है, एक महीने में हो सकता है अथवा इसमें एक साल भी लग सकता है।

अभ्यास कार्य–2

केस स्टडी–5 में से जी.आर.आर. के ये चरण पहचानें, नीचे लिखें और इसे अपने मेंटर को भेजें।

चरण–1. अध्यापक द्वारा 'करके दिखाना'

....

....

चरण–2. अध्यापक और बच्चों द्वारा मिलकर करना

....

....

चरण–3. बच्चों द्वारा अध्यापक के मार्गदर्शन में करना

....

....

चरण–4. बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से करना

....

....

अपना उत्तर भेजने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

क्या आपको लगता है कि इस उदाहरण के किसी चरण में अध्यापिका को कुछ और स्कैफ़ोल्डिंग देनी चाहिए थी? एक उदाहरण सोचें।

कहानी के लिए

शीर्षक ....

शुरुआत ....

इसके बाद ....

फिर ....

अंत में ....

आकृति–10

हमें लगता है कि बच्चों को पूरी कहानी अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहने से पहले शिक्षिका बच्चों को थोड़ी स्कैफ़ोल्डिंग और दे सकती थीं। अक्सर देखा जाता है कि यदि अध्यापक द्वारा कहानी सुनाने के बाद बच्चों को सीधा ही कहानी को अपने शब्दों में सुनाने को कहा जाए तो वे कहानी की बहुत छोटी–छोटी बारीकियों में जाने लगते हैं और व्यवस्थित रूप से कहानी की मुख्य घटनाएँ नहीं बता पाते। ऐसे में हम उन्हें कहानी पढ़ने के बाद एक ग्राफ़िक ऑर्गेनाइज़र (जैसाकि आकृति–11 में दर्शाया हुआ है) का इस्तेमाल करते हुए कहानी के मुख्य चार–पाँच घटनाक्रमों को लिख दें तो उसकी मदद से बच्चों को कहानी को अपने शब्दों में सुनाने में मदद मिलेगी।

अतः संक्षेप में अगर हम कहें तो सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः बच्चों को सौंपने की प्रक्रिया को नीचे दिए जा रहे चित्र (आकृति–12) के ज़रिए दर्शाया जा सकता है :

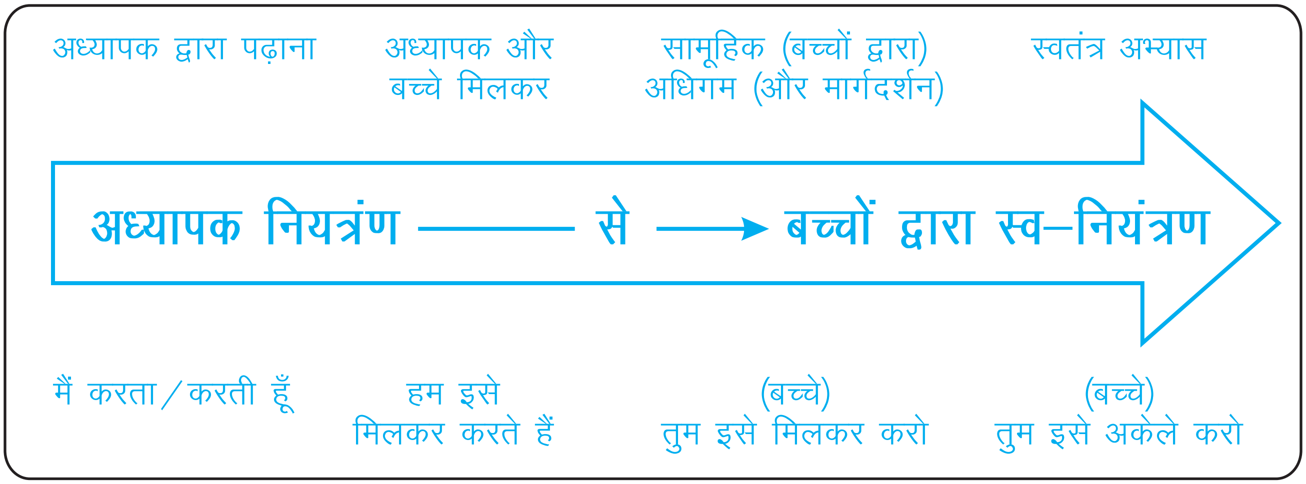

आकृति–11

5. कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण

हम पूरे जीवन उन शिक्षकों को सबसे ज़्यादा याद करते हैं जिनमें सुंदर मानवीय गुण थे, जो हँसते–मुस्कराते थे, प्यार से बात करते थे, और हमारा सच्चा ख्याल रखते थे। उन कक्षाओं में हम सर्वाधिक फलते–फूलते हैं। वहाँ हम महसूस करते हैं कि एक इंसान के रूप में हमारी कद्र की जाती है और हमें प्यार किया जाता है। इस तरह सफल शिक्षण अनुभवों का वास्ता औपचारिक शिक्षण से भी ज़्यादा उस वातावरण से होता है जो सीखने के लिए तैयार किया जाता है, जहाँ बच्चा भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करता हैं।

बहुत से अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि बच्चों के स्वस्थ भावनात्मक व सामाजिक विकास के लिए शिक्षक व बच्चों के बीच का मज़बूत व सौहार्दपूर्ण संबंध बहुत बड़ी भूमिका निभाता है।

शुरुआती सालों में, जब बच्चा स्कूल के माहौल में नया है तब स्कूल के सामाजिक और शैक्षिक वातावरण में ढलने के लिए बच्चे का शिक्षक से संबंध बेहद महत्वपूर्ण हैं।

अध्ययन दिखाते हैं कि :

I. जब बच्चे को अध्यापक से प्यार व मदद मिलती है तो वे स्कूल को पसंद करते हैं और दूसरे बच्चों के साथ भी सहज ही घुल–मिल पाते हैं।

II. शिक्षक के साथ अच्छे व प्रेमपूर्वक संबंध बच्चे को भावनात्मक सुरक्षा देते हैं और उन्हें पढ़ाई में बेहतर उपलब्धि की ओर ले जाते हैं।

III. जो बच्चे निम्न–आय वाले घरों से आते हैं या फिर जिन्हें पढ़ाई में पिछड़ने का खतरा ज़्यादा है, उन्हें शिक्षक के प्रेम से सबसे ज़्यादा फ़ायदा होता है। शिक्षक के साथ अच्छा संबंध उन्हें पढ़ाई में तथा दूसरे बच्चों के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद करता है।

IV. किसी भी बच्चे के सीखने के लिए प्रेरणा बहुत ज़रूरी है, साथ ही उसका ख़ुद पर विश्वास कि उसमें सीखने की पूरी क्षमता है। इन दोनों के लिए अध्यापक का प्रोत्साहन मुख्य भूमिका निभाता है।

5.1 कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण कैसे बनाएँ?

यदि कक्षा का माहौल ऐसा है जहाँ बच्चे डर महसूस नहीं करते और आसानी से अपनी बात सबके सामने रखने की हिम्मत रखते हैं, तो इससे सीखने में बहुत मदद मिलती है। ऐसे में, बच्चों को यह डर नहीं रहता कि कोई उनका मज़ाक उड़ाएगा या उन्हें नीचा दिखाया जाएगा। ऐसे माहौल के लिए शिक्षक बच्चों को खुलकर अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हर विचार और राय का स्वागत किया जाता है, साथ ही जहाँ ज़रूरत हो नरमी से सुधार भी किया जाता है। ऐसे माहौल में बच्चे सीखने की नई चुनौतियाँ अपने ऊपर लेने का साहस कर पाते हैं।

आयाम	कक्षा में प्रदर्शन/प्रस्तुति के तरीके
अपनत्व भरा माहौल	• बच्चों से व्यक्तिगत रूप से बात करना; उनके परिवारों से संपर्क रखना • हँसमुख स्वभाव, दोस्ताना रवैया, उनकी देखभाल करना, उनके प्रति लगाव दिखाना और उनकी ज़रूरतों के प्रति फ़िक्र दिखाना
प्रत्येक बच्चे को जानना और उसे महत्व देना	• बच्चों को बोलने देना • प्रत्येक बच्चे को उसके नाम से पुकारना • प्रत्येक बच्चे की रुचियों और पृष्ठभूमि को समझना • सभी बच्चों को सहभागिता के लिए प्रोत्साहित करना • ऐसे बच्चों पर विशेष ध्यान देना जिनकी ख़ास ज़रूरतें हैं • बच्चों में भिन्नता का सम्मान करना और उनके ज्ञान व अनुभवों को महत्व देना
बच्चों के आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना	• उत्साहवर्धक बातें कहना; बच्चों के काम को मान्यता देना और उसकी सराहना करना

	• बच्चों के बीच प्रतिस्पर्धा के बजाय परस्पर सहयोग को प्रोत्साहन देना • ज़रूरत न होने पर या जब उपलब्धि आधारित शिक्षण नहीं दिया जाना हो, तब बच्चों के उपलब्धि स्तर आधारित समूह नहीं बनाना। • प्रत्येक बच्चे को आवश्यकता के अनुसार सहायता देना; बच्चों के प्रयास व प्रगति की सराहना करना। (उनके पिछले प्रदर्शन की तुलना में) • सभी बच्चों से ऊँची अपेक्षाएँ रखना यह मानना कि क्षमताएँ जड़ नहीं होतीं। अगर कोई बच्चा अभी कठिनाई महसूस कर रहा है तो यह नहीं मान लेना चाहिए कि वह सीख या समझ नहीं पाएगा। हर बच्चे से अपेक्षा रखने से उस बच्चे में विश्वास पैदा होता है कि वह कोशिश करे तो सीख सकता है।
घर और स्कूल के फासले को पाटने में छोटे बच्चों की मदद करना	• छोटे बच्चों (जिनमें से कई के पास प्री–स्कूल का अनुभव नहीं होता) को स्कूल के 'तरीकों' से परिचित कराना, जैसे– लगातार बैठना, ध्यान से सुनना, कक्षा के छोटे–छोटे नियमों का पालन करना • उन्हें किसी गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करने और उस पर टिके रहने में मदद देना • दूसरे बच्चों के साथ मिलकर काम करना

बच्चों को खुलकर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करना, बच्चों की गलतियों को सीखने का ही हिस्सा माना जाना चाहिए। अध्यापक की यह कोशिश होनी चाहिए कि कक्षा में कोशिश करने और गलत होने का जोखिम उठाना भी आराम से हो सके। किसी का भी मज़ाक या अपमान न हो।

6. सीखने की प्रक्रिया में सभी बच्चों का जुड़ाव

मॉड्यूल–2 इकाई 1, खंड–7 में हमने सक्रिय भागीदारी के बारे में चर्चा की थी। कुछ कक्षाओं की झलक से हमने देखा कि किस तरह हमारी कुछ कक्षाओं में इसका अभाव नज़र आता है। असल में, सीखने के लिए बच्चों का सक्रिय होना बहुत ज़रूरी है।

गतिविधि–9

नीचे लिखी परिस्थितियों में वे चुनें जिनमें आपको लगता है बच्चे सबसे ज़्यादा सीखेंगे :

1. जब बच्चा सुनने का अभिनय कर रहा है।
2. बच्चा सुन रहा है लेकिन बीच–बीच में उसका ध्यान इधर–उधर हो जाता है।
3. जब बच्चा हाथों से कुछ कर रहा है, जैसे– उँगली रखकर बोलना।
4. जब वह सोचकर पढ़ या बोल रहा है।
5. जब वह दिमाग लगाकर स्वयं की राय दे रहा है।
6. जब उसको काम करने में रुचि और उत्साह है।
7. जब उसे काम में चुनौती महसूस हो रही है और आगे बढ़ने का एहसास हो रहा है।
8. जब उसे सफलता का एहसास हो रहा है। उसका आत्मविश्वास बढ़ रहा है।

उत्तर इकाई के अंत में देखें।

यह देखना कठिन नहीं कि असल में सीखना तभी हो पाता है जब बच्चे नीचे दिखाई प्रक्रियाओं में से किसी में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

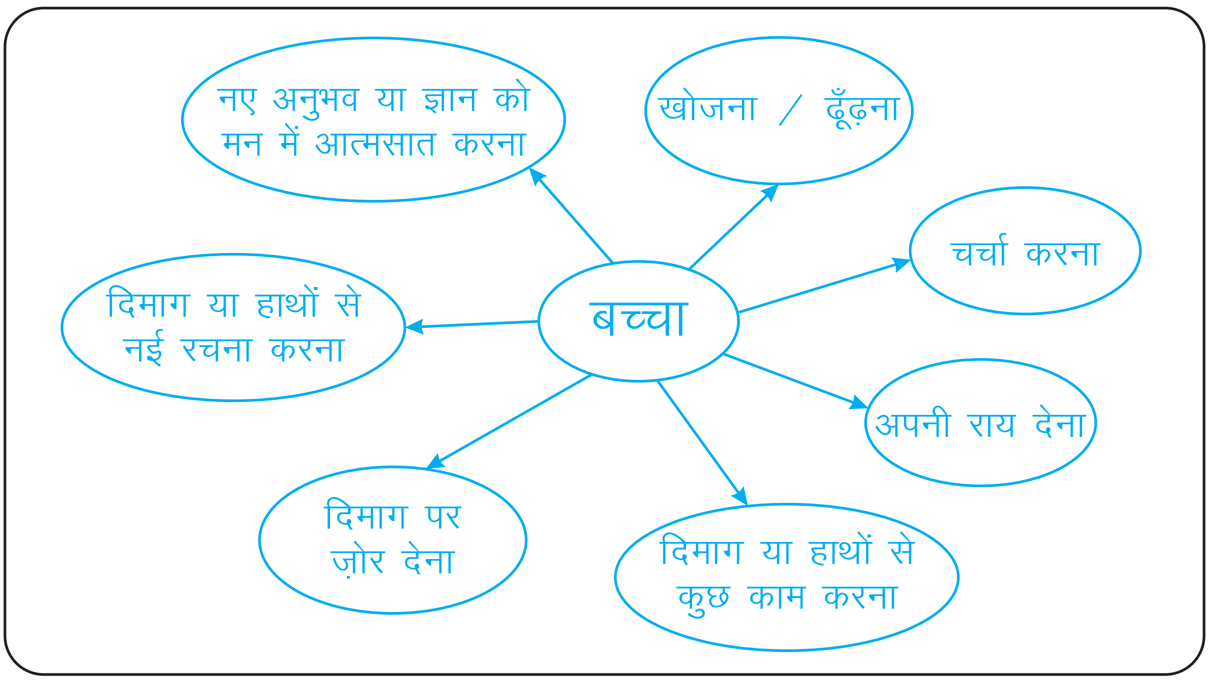

आकृति–12

बच्चों की सक्रिय भागीदारी तभी होती है जब वे उत्साहपूर्वक एवं मन लगाकर ध्यान से सुन रहे हों, प्रतिक्रिया दे रहे हों, चर्चा कर रहे हों, पढ़ रहे हों अथवा लिख रहे हों। सिर्फ़ चुपचाप बैठकर अध्यापक को सुनते रहने से नहीं!

स्पष्ट है कि शिक्षक को कक्षा में बच्चों के लिए ऐसे अनुभव तैयार करने होगें, जिनमें ऊपर दिखाई गई प्रक्रियाओं में से कुछ होने की गुंजाइश हो।

साथ ही, शिक्षक को इस पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है कि केवल वही बच्चे सीख पाएँगे जो शिक्षण की प्रक्रिया से सक्रिय रूप से जुड़े रहेंगे। ज़्यादातर कक्षाओं में कई बच्चे चुपचाप या निष्क्रिय बने रहते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा वे मशीनी रूप से शैक्षणिक काम कर रहे होते हैं। शिक्षक को भी विशेष रूप से ऐसे बच्चों को जोड़ने के प्रयास करने होंगे। इसके लिए बच्चे की परिस्थितियों और उसकी समस्या समझने के साथ ही प्रेरणा, प्रोत्साहन और प्रेम देने तक कई विधियाँ अपनाई जा सकती हैं। यह भी संभव है कि ऐसे कुछ बच्चे अपने को केवल उपेक्षित या महत्वहीन मानकर ही कक्षा से नहीं जुड़ते हों।

केवल कक्षा के काम में लगे रहने (टाइम–ऑन–टास्क) का मतलब जुड़ाव नहीं है। जैसाकि हमने मॉड्यूल–2, इकाई 1, खंड–7 में पढ़ा, बच्चा किसी गतिविधि से तभी जुड़ेगा जब उसका पूरा ध्यान उस काम में हो। यही नहीं, वह काम को रुचि से, उत्साह से, किसी उद्देश्य के साथ तथा एकाग्रता से कर रहा हो; साथ ही उसे काम को पूरा करने का कोई मकसद या फ़ायदा समझ आता हो। दूसरे देशों में किये गए अध्ययनों में सामने आया है कि अगर बच्चों का काम से जुड़ाव है तो उनकी उपस्थिति और उपलब्धि दोनों बेहतर होती हैं।

केस स्टडी–6

अध्यापिका नीता अपनी साक्षरता कक्षा शुरू करने जा रही हैं। आज वे कहानी पढ़ाने वाली हैं। सभी बच्चे उनके चारों ओर बैठे हैं। नीता सभी बच्चों को कहानी का कवर पेज दिखाती हैं और कहानी का शीर्षक पढ़ कर सुनाती हैं – "आलसी, अकेली रोली।" अब वे बच्चों से पूछती हैं कि आप में से किस–किस ने कभी अकेलेपन का अहसास किया है – अपने जोड़ीदार से बात करो और एक–दूसरे को बताओ कि आपको कब–कब अकेलापन महसूस हुआ है। इसके बाद सभी बच्चे अपने जोड़ीदार को बताने लगते हैं कि उन्हें कब ऐसा महसूस हुआ था। कुछ बच्चे अपने जोड़ीदारों को बताते हैं कि अकेलापन क्या होता है। जैसे, जब कोई हमारे पास नहीं होता। बच्चों को दो–तीन मिनट की चर्चा का समय देने के बाद वे कुछ बच्चों से इस बारे में अपनी राय बताने को कहती हैं। सभी बच्चे निजी अनुभव बताने को उत्साहित हैं। सोनिका बताती है कि जब उसके मम्मी–पापा घर पर नहीं होते तो उसे अकेलापन महसूस होता है। राहुल कहता है कि जिस दिन उसका सबसे अच्छा दोस्त कक्षा में नहीं आता तो उसे अकेलापन लगता है... । इसके बाद बच्चे इस बारे में अंदाज लगाने लगते हैं कि कहानी में क्या होने वाला है और फिर अध्यापिका कुशल पठन एवं चिंतन की रणनीतियों का उपयोग करते हुए कहानी पढ़कर सुनाती हैं।

गतिविधि–10

आपके अनुसार, क्या इस कक्षा में बच्चे सक्रिय रूप से शिक्षण से जुड़े हुए हैं? हाँ / नहीं? अपने कारण भी लिखिए

....

....

6.1 बच्चों का जुड़ाव बढ़ाने के लिए कुछ रणनीतियाँ :

I. पाठ को अपने पूर्वज्ञान और अनुभवों से जोड़ने में बच्चों की मदद करना।

II. उन संदर्भों व भाषा का प्रयोग करना जिन्हें बच्चे जानते हों।

III. बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाना, उन्हें खोज–बीन करने के लिए उत्साहित करना।

IV. शिक्षक को बच्चों के बीच स्पर्धा के बजाय सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए। उन्हें ऐसे अवसर निर्मित करने चाहिएँ जिससे बच्चे एक–दूसरे के साथ चर्चा कर सकें और जोड़ों या समूहों में साथ–साथ काम कर सकें।

V. खेल वाली गतिविधियों को शिक्षण का हिस्सा बनाना।

VI. गतिविधियों के बीच बच्चों को लंबे समय इंतजार न करवाना।

VII. सभी सीखने वाले बच्चों को नई जानकारी या विचारों को समझने के लिए समय चाहिए होता है। अपनी समझ को दूसरों को बताना या उस पर दूसरों से चर्चा करना इसमें मदद करता है कि नए विचारों को आत्मसात करने का बेहतर अवसर मिले। यह कई प्रकार से किया जा सकता है :

(i) पूरी कक्षा में चर्चा जिसे शिक्षक सहायता दे रहे हों।

(ii) सोचो – जोड़े बनाओ – साझा करो। (इसे नीचे दर्शाया गया है)।

- अध्यापक सोचने के लिए एक सवाल देते हैं
- बच्चे उसके ज़वाब पर सोच–विचार करते हैं
- फिर वे मुड़कर अपने बगल में बैठे जोड़ीदार से चर्चा करते हैं और उसके साथ साझा करते हैं
- अध्यापक कुछ जोड़ों या उसमें से कुछ बच्चों को अपना अनुभव साझा करने को कहते हैं

VIII. इन सभी चीज़ों के लिए शिक्षक को धैर्य की आवश्यकता होती है। शिक्षक को बच्चों के सोचने और बोलने के लिए प्रतीक्षा करनी होती है, बजाय इसके कि शिक्षक तुरंत सही उत्तर खुद दें।

अभ्यास कार्य–3

मुस्कान स्वयंसेवी संस्था के इस 2 मिनट के वीडियों को देखें। बच्चों से जुड़ाव बनाने के कौन से तरीके आपको दिख रहे हैं, ऊपर दी गई सूची में से चिह्नित करें, यदि आपको कुछ नया दिखता है तो वो भी लिखें । अपना उत्तर मेंटर को भेजें।

....

....

वीडियो देखने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

अपना उत्तर भेजने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

7. सोचने की प्रक्रिया के लिए मौके और प्रोत्साहन देना

नया ज्ञान हासिल करने के लिए यह ज़रूरी है कि हमें नए विचारों पर सोचने और उन्हें आत्मसात करने का मौका मिले। इसके लिए यह ज़रूरी होता है, कि हम उनका अर्थ स्वयं निकालें और खुद यह सोच सकें कि ये विचार क्यों हमें ठीक या सही लगते हैं। अक्सर कक्षा में बच्चों को नई जानकारी सुनने–समझने का मौका नहीं मिलता। नतीजा, वे केवल किताब में लिखा रट कर ज्यों–का–त्यों उगल देते हैं। जिस ज्ञान को उन्हें समझने का, खुद मतलब निकालने व सोचने का मौका न मिला हो, उसे ज्ञान–अर्जन मानना सही नहीं होगा।

हालाँकि, सच्चाई तो यह है कि शुरुआती भाषा कक्षाओं में अर्थ समझने को विशेष महत्व नहीं दिया जाता। कई शिक्षक व्याख्या करते हैं या कठिन शब्दों का अर्थ बताते हैं, लेकिन पाठ पर गहराई से सोचने, व्याख्या करने का, प्रमुख विचारों पर ध्यान देने पर ज़ोर नहीं देते। जैसा, हमने मॉड्यूल–1 में पढ़ा कि अलग–अलग शब्दों या वाक्यों के अर्थ समझने को 'स्थानिक समझ' कहा है। लेकिन हर शब्द या वाक्य को समझने के साथ यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चा पूरे पाठ या कहानी का संपूर्ण अर्थ समझ सकें। इस व्यापक समझ को 'सार्विक समझ' कहा जाता है।

7.1 बच्चों में सोचने के कौशल की महत्ता

हमने मॉड्यूल 1, इकाई 1, खंड–6 में देखा कि किस प्रकार भाषा सोचने का शक्तिशाली माध्यम है। बोलने, लिखने व पढ़ने के ज़रिए भाषा की कक्षा बच्चों में सोचने–समझने की मज़बूत क्षमता पैदा कर सकती है। साथ ही हमने साक्षरता के तत्वों का एक चित्र भी देखा था (ओईएलपी संस्था से) जिसमें सोचने के कौशल की तुलना हाथ के अंगूठे के साथ की गई थी। उसके बिना बाकी कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) अधूरे और यांत्रिकी स्तर पर रह जाते हैं।

शुरुआती सालों से ही बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए कि वे जो भी सुनते, पढ़ते या लिखते हैं उसके बारे में खुद सोचें। भाषा के पाठ्यक्रम के ज़रिए कई उच्च–स्तरीय वैचारिक क्षमताएँ विकसित की जा सकती हैं, जैसे– कारण सोचना, समीक्षा करना, तर्क करना, प्रश्न करना तथा अपने विचारों को स्पष्ट व व्यवस्थित ढंग से प्रकट करना। किसी पाठ के मुख्य विचार को पकड़ पाना आदि। ये सभी क्षमताएँ सभी विषयों में कुछ भी नया सीखने के लिए बहुत ज़रूरी होती हैं।

7.2 सोचने के कौशल का शिक्षण में प्रयोग

गतिविधि–11

TESS-India संस्था का वीडियो देखने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

प्रश्न–1. इस वीडियो को ध्यान से देखें। आपके अनुसार अध्यापक बच्चों को सोचने के लिए कैसे प्रेरित कर रहे हैं? नीचे दिए गए विकल्पों में से जो आपको उपयुक्त लगते हैं, उन्हें चुने–

1. अध्यापक बच्चों को खुद कहानी का नया अंत सोचने देते हैं।
2. वे बच्चों को चुप रखते हैं।
3. वे चित्रों के ज़रिए अर्थ निकालने में मदद देते हैं।
4. वे बच्चों को अन्य संभावनाएँ सोचने देते हैं।
5. वे कहानी को पाठ्यपुस्तक से पढ़ते हैं।

6. वे बच्चों को विचार रखने पर शाबाशी देते हैं।
7. वे बच्चों को निडर होकर बोलने देते हैं।
8. वे हर बच्चे के विचार की इज्ज़त करते हैं चाहे विचार कहानी से अलग भी हो।
9. वे केवल कुछ ज़वाबों को ही सही ठहराते हैं।

प्रश्न–2. मान लीजिए यही कहानी एक कक्षा में सुनाई गई है। अब अध्यापिका बच्चों से प्रश्न पूछती हैं। नीचे दिए प्रश्नों में से जो आपको ज़्यादा सोच बढ़ाने वाले लगते हैं, उन्हें चुने –

1. कौए ने पानी ऊपर लाने के लिए क्या किया?
2. कौए को क्या चाहिए था?
3. कौए की जगह गाय होती, तो क्या करती?
4. अगर कौआ घड़े को उलट देता, तो क्या होता?
5. क्या कौए को पानी मिल गया?
6. कौआ अगर घास या रेत डालता, तो क्या होता?
7. तुम बहुत प्यासे होते, तो क्या करते?
8. कौए को घड़ा न मिलता, तो वह क्या करता?
9. अगर तुम्हें घड़ा न मिलता, तो तुम क्या करते?

आप देख सकते हैं कि कुछ प्रश्नों का जवाब एक ही शब्द में दिया जा सकता है, या 'जानकारी' वाला प्रश्न होने की वजह से उसका एक ही सही जवाब होता है। इनमें ज़्यादा आगे सोचने की गुंजाइश नहीं होती है। इन्हें हम **'बंद छोर वाले प्रश्न' (Close ended Question)** कह सकते हैं। ''क्या कौए को पानी मिल गया?'' ऐसा ही प्रश्न है।

इसी तरह कई प्रश्न पाठ से उत्तर को केवल ढूँढने का काम करवाते हैं। इनमें बच्चों को अपनी कल्पना को इस्तेमाल करने का, या विवेचन करने की गुंजाइश नहीं होती। ''कौए ने पानी ऊपर लाने के लिए क्या किया?'' यह ऐसा ही प्रश्न है, तथा यह भी बंद छोर वाला प्रश्न ही है। ऐसे प्रश्न यह देखने के लिए ज़रूरी होते हैं कि क्या बच्चों ने कही गई बात ठीक से समझी या नहीं। यदि सभी बंद छोर वाले प्रश्न पूछे जाएँ तो बच्चों को कुछ नया सोचने का मौका नहीं मिलता।

बच्चों की सोच को बढ़ाने के लिए **'खुले छोर वाले प्रश्न' (Open ended questions)** अच्छे होते हैं। इनका कोई एक ही सही जवाब नहीं होता और इससे नए हल या विकल्प सोचने, कल्पना करने का मौका मिलता है।

''कौए की जगह गाय होती तो क्या करती?'' ऐसा ही प्रश्न है। नीचे ऐसे प्रश्नों के कुछ अन्य उदाहरण दिए गए हैं–

I. अगर आपको एक दिन के लिए जंगल का राजा बना दिया जाए तो आप जंगल में क्या बदलाव करेंगे?

II. 'जाड़ों के मुकाबले गर्मियों का मौसम ज़्यादा अच्छा होता है।' क्या आप इस बात से सहमत हैं? क्यों? आपको सबसे ज़्यादा कौन–सा मौसम अच्छा लगता है? क्यों?

III. जग से पानी पीने में आप कौए की किस तरह मदद करते?

IV. अगर आप जानवर का जन्म लेते तो आप कौन–सा जानवर बनना पसंद करते? क्यों?

V. कहानी के अंत के बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या आपको कहानी का अंत अच्छा लगा? क्यों?

VI. अगर ऐसा होता कि...... तो क्या होता? (जैसे, अगर आप एक ही दिन में पचास केले खा लेते, तो क्या होता?

VII. आप पानी का इस्तेमाल किसलिए करते हैं? अगर पानी का रंग लाल होता तो क्या तब भी वह आपको अच्छा लगता? क्यों?

ऐसे सवालों को आप बच्चों को समूह या जोड़े में चर्चा के लिए भी दे सकते हैं।

गतिविधि–12

हम नीचे कुछ प्रकार की सोचने की प्रक्रियाओं के उदाहरण दे रहे हैं। आपको यह देखना है कि इनमें से कौन–सी प्रक्रिया ऊपर दिए गए किस प्रश्न पर लागू होती है। यानी बच्चे किसी प्रश्न पर सोचते हुए इनमें से किस तरह के सोचने का काम कर रहे होंगे?

सोचने की प्रक्रिया	प्रश्न संख्या
तुलना करना व अंतर करना	
विचारों का मूल्यांकन करके अपनी राय बनाना	
अनुमान लगाना कि आगे क्या होगा	
व्याख्या करना कि कोई चीज़ क्यों हो रही है?	
दूसरों के दृष्टिकोण को समझना	
नए रचनात्मक या कल्पनाशील विचार सोचना	

8. विस्तारित वार्तालाप के अवसर

केस स्टडी–7

चित्र–5

इस चित्र पर दो कक्षाओं– क और ख में अलग–अलग तरह की चर्चाएँ हुईं। इन दोनों चर्चाओं का कुछ भाग यहाँ पढ़िए :

कक्षा – क

शिक्षक : क्या–क्या दिख रहा है चित्र में ?

बच्चे : पानी, नदी, आदमी, टोकरी

शिक्षक : यह आदमी कौन है?

बच्चे : नदी में काम करने वाला / मछ्ली पकड़ने वाला

शिक्षक : हाँ, लेकिन इसको मछुआरा कहते हैं। क्या कहते हैं?

बच्चे : मछुआरा

शिक्षक : शाबाश! अच्छा यह बताओ, मछुआरा मछली क्यों पकड़ता है?

बच्चे : मछली पकड़ता है, बेचता है, पैसे कमाता है, काम करता है

शिक्षक : शाबाश! लोग अलग–अलग तरह के काम करते हैं। तुम बता सकते हो, तुम्हारे घर के आसपास लोग किस–किस तरह के काम करते हैं?

दो बच्चे (बाकी बच्चे चुप) : मिठाई बेचते हैं, किराने की दुकान चलाते है

शिक्षक : देखो, और भी काम होते हैं जो लोग करते हैं। कुछ लोग कबाड़ बेचते हैं, जूता चप्पल ठीक करते हैं, खेती करते हैं, ऑफिस जाते हैं, कंप्यूटर चलाते हैं

बच्चा : सर, कचरा बीनते हैं, मिट्टी का सामान बनाते हैं

शिक्षक (बिना कोई प्रतिक्रिया दिए) : अच्छा तुम सब बडे होकर क्या काम करोगे?

दो बच्चे (बाकी बच्चे चुप) : डॉक्टर बनेंगे, मटका बनाएँगे

शिक्षक : शाबाश, तुम सब और भी काम कर सकते हो। जैसे, मेरी तरह शिक्षक बन सकते हो, लोगों के बाल काट सकते हो, खेती कर सकते हो।

कक्षा–ख

शिक्षक : (बच्चों को चित्र दिखाते हुए) अच्छा बताओं इस चित्र में तुम्हें क्या–क्या दिख रहा है?

बच्चे: पानी, नदी, आदमी, टोकरी,मछ्ली पकड़ने वाला

शिक्षक : बिलकुल सही! क्या मछली पकड़ने वालों का कोई नाम होता है? जैसे– इलाज करने वाले का होता है डॉक्टर, पढ़ाने वाले का अध्यापक।

कुछ बच्चे : हाँ, मछुआरा।

एक बच्चा : इसकी टोकरी इतनी बड़ी है और उसमें बस एक ही मछली है।

शिक्षक : सही बात! तो क्या तुम सब इसकी वजह सोच सकते हो?

बच्चे : मछली नहीं होगी पानी में

शिक्षक : थोड़ा खुलकर बताओ

बच्चे : अगर बहुत से लोग पहले ही पकड़ लेंगे तो बाकियों को नहीं मिलेगी।

शिक्षक : बिलकुल! ऐसा हो सकता है। अच्छा,कोई और वजह भी हो सकती है कि मछुआरों को मछली न मिले?

बच्चे : अगर तूफ़ान आएगा, तो नहीं पकड़ने जा सकेंगे। अगर तेज़ बारिश होगी तो भी।

शिक्षक : तूफ़ान या बारिश से कैसे?

बच्चे : वो नाव ले जाने में डरते होंगे। नाव डूब सकती है। वो मर सकते हैं, इसलिए उन्हें मछली नहीं मिल सकती।

शिक्षक : सोनू, तूफ़ान से क्या हो सकता है?

सोनू : तूफ़ान से उनको मुश्किल होगी पकड़ने में

शिक्षक : तो ऐसे में वो क्या करेंगे?

सोनू : वो नहीं जाएँगे तूफ़ान में

शिक्षक : हाँ, पर उस दिन तो उनका नुकसान हुआ तो वो अब क्या करेंगे?

सोनू : पुरानी मछली बेचेंगे

शिक्षक : तुमको क्या लगता है रेणु, पुरानी मछली बेचेंगे?

रेनू : नहीं, पुरानी मछली नहीं लेगा कोई, वो कोई और काम ढूँढेंगे

सीमा : अपने पुराने पैसे काम में लाएँगे, जो उन्होंने पहले कमाए होंगे

शिक्षक : हाँ, पर पैसे तो ख़त्म हो जाएँगे न, वो कब तक चलाएँगे। मुझे लगता है वो दूसरे गाँव जाते होंगे, कुछ समय के लिए,वहाँ पर काम शुरू करते होंगे।

गतिविधि–13

ऊपर दी गई दोनों कक्षाओं में हुई चर्चाओं के आधार पर नीचे दिए गए बिन्दुओं में आपको क्या क्या विशेषताएँ लगीं उन्हें लिखें।

	कक्षा क	कक्षा ख
विषय वस्तु के पहलू		
बच्चों की भागीदारी		
बातचीत का स्तर		
सोचने और तर्क करने के मौके		
समीक्षा करने के मौके		
चर्चा को आगे बढ़ाने के अवसर		

असल में कक्षा–ख में हो रही बातचीत 'विस्तारित वार्तालाप' है, जिसके द्वारा :

I. एक विषय के बारे में नई जानकारी मिलती है जो बच्चों को कुछ नया सीखने में मदद करती है।

II. किसी विषय को और गहराई से समझने में सहायता मिलती है।

III. चुने गए विषय के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल करती है। जैसे– आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि।

IV. समीक्षा करने, तर्क–वितर्क करने के ज़्यादा अवसर देती है।

यदि आपको याद हो, मॉड्यूल-2 में हमने दर्शाया था कि कैसे मौखिक भाषा का विकास साक्षरता के लिए निर्णायक होता है और साक्षरता की नींव भी डालता है। इस खंड में हम मौखिक भाषा के उस विशिष्ट अंग की बात कर रहे हैं जिसे विस्तारित वार्तालाप कहा जाता है।

विस्तारित वार्तालाप ऐसी बातचीत है जिसमें भागीदारी करने वाले लोग एक–दूसरे के विचारों की समीक्षा करते हुए रचनात्मक ढंग से बात आगे बढ़ाते हैं।

जैसाकि आप ने ऊपर दी हुई कक्षा 3 में देखा, शिक्षक व बच्चे एक दूसरे के विचार को आगे बढ़ा रहे थे कि मछुआरे के पास एक ही मछली क्यों थी। वह और मछलियाँ कैसे लाएगा। बोलने वाला व्यक्ति उपयोगी जानकारी सबके सामने विचार–विमर्श के लिए रखता है। जो भी कहा जाता है, उससे सहमति या असहमति प्रकट की जाती है, लेकिन कारण भी बताए जाते हैं और विकल्प पेश किए जाते हैं; दिए गए संदर्भ में से सुराग भी दिए जाते हैं। जैसे कि मछुआरे के पास बहुत बड़ा जाल था। बात बढ़ाने के लिए सहमति बनाने की कोशिश की जाती है। इस प्रकार, किसी विषय पर बच्चों में चलने वाली लंबी बातचीत विस्तारित वार्तालाप है।

जब बच्चे इस प्रकार की बातचीत में व्यस्त होते हैं, हम उन्हें प्रकट रूप से सोचते देख सकते हैं। अनुमान लगाते हुए बच्चे संभावनाएँ रखते हैं, और हम उन्हें 'शायद', 'हो सकता है', 'यदि', 'अगर' जैसे शब्द, अपने विचारों के साथ लगाते देख सकते हैं। वे अपने विचारों पर ज़ोर देने के लिए कारण बताते हैं। 'क्योंकि' का इस्तेमाल करते हैं, और अपने समर्थन के लिए औरों से पूछते हैं, 'है ना!' ज़ाहिर है वे एक–दूसरे की, और शिक्षक की बात सुनकर उस पर विचार कर रहे हैं।

बच्चों में सीखना एक लंबी प्रक्रिया है और उन्हें शिक्षक व दूसरे बच्चों के साथ अन्तःक्रिया करते हुए, अभ्यास करने के पूरे मौके मिलने चाहिए। इसका सबसे अच्छा तरीका संवाद है जो शिक्षक और एक बच्चे या समूह के साथ होता है।यह दर्शाया गया है कि शिक्षक–छात्र संवाद विस्तारित वार्तालाप का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।

8.1 विस्तारित वार्तालाप की महत्ता

विस्तारित वार्तालाप सीखने की प्रक्रिया का प्राकृतिक और आवश्यक हिस्सा है। यह बच्चों को अधिक सोचने के लिए उकसाता है, जिससे वे सक्रिय व सचेत रूप से सीखते हैं। इस प्रकार सीखने के लिए कक्षा में बातचीत संवाद के रूप में होनी चाहिए, जिससे बच्चे अपनी समझ को विकसित करने के लिए अपने विचारों को आज़माते हुए अपनी बात कह सकें।

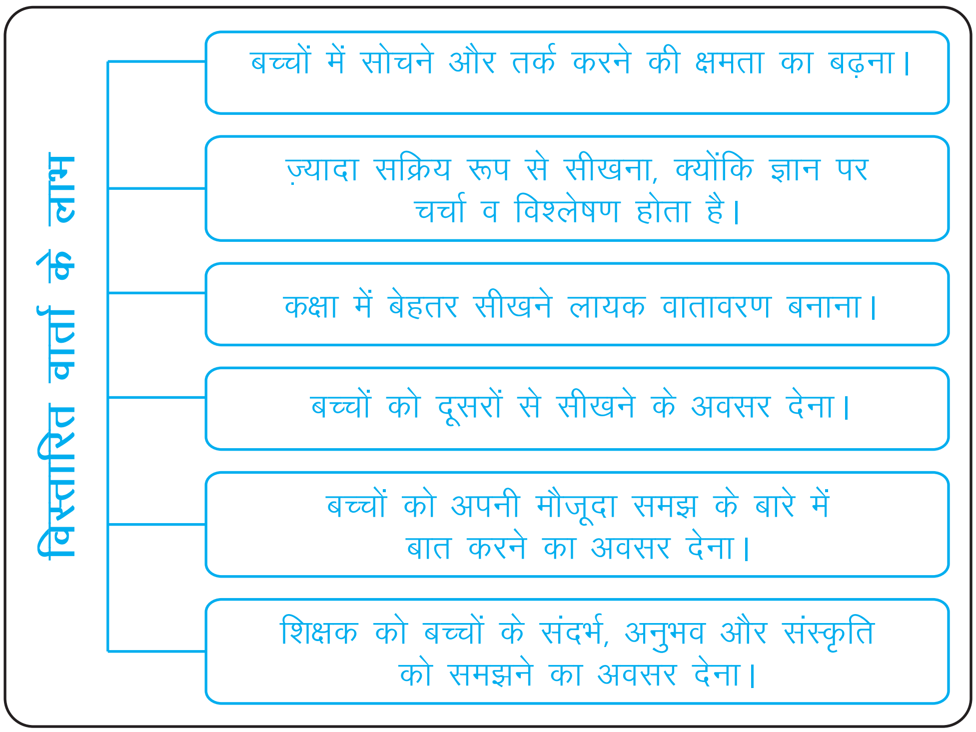

आकृति–13

8.2 कक्षा में विस्तारित वार्तालाप बढ़ाने के तरीके

	अपनी ओर से कम बोलें और बच्चों की बात ग़ौर से सुनें।
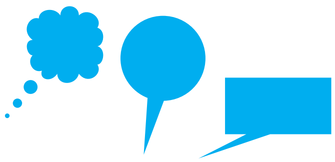	ऐसे खुले छोर वाले प्रश्न पूछें जिनके लिए बच्चों को सोचकर उत्तर देना पड़े और बच्चों से प्रारंभिक संक्षिप्त उत्तरों के बाद अपनी बात को और विस्तार से कहने के लिए कहें।
	किसी भी अध्याय या शीर्षक के तहत बातचीत व चर्चा के अवसरों की योजना बनाएँ।
	अध्यापक या दूसरे समूहों के सामने प्रस्तुति के बाद जोड़ों और समूहों में चर्चा तथा आदान–प्रदान के लिए नियमित व्यवस्था करें तथा यह सुनिश्चित करने के तरीके अपनाएँ कि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को सहभागिता का अवसर मिले।
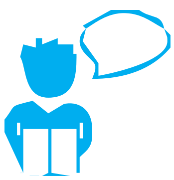	बच्चों को बिना डरे (गलती करने पर डाँट के डर के बिना) अपनी बात कहने दें क्योंकि गलती भी सीखने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है।
	संवाद को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों को उकसाएँ, उनकी बात को दोहराएँ, उनकी बात को अलग ढंग से कहें और उनकी बात को विस्तार दें।

आकृति–14

8.2.1 सोचने का समय या प्रतीक्षा–समय

यदि हम चाहते हैं कि हमारी कक्षा में बच्चे ज़्यादा शामिल हों, अधिक सोचें और गहराई से उत्तर दें, तो हमें एक बहुत सरल परंतु शक्तिशाली तकनीक इस्तेमाल करनी चाहिए। वह है– **बच्चों को सोचने का ज़्यादा समय देना।**

अक्सर सभी कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा कई प्रश्न पूछे जाते हैं। लेकिन बच्चों को प्रश्न के बारे में सोचने के लिए बहुत ही कम समय दिया जाता है। शोधों में दिखाया है कि बहुत से शिक्षक बच्चों को सोचकर बोलने के लिए एक सेकेंड से भी कम समय देते हैं। यदि कोई बच्चा तुरंत ना बोल पड़े तो शिक्षक मान लेते हैं कि बच्चों को सवाल का ज़वाब मालूम नहीं है। अक्सर केवल ज़्यादा बोलने वाले या तेज़–तर्रार बच्चे ही कुछ कहते हैं और बाकी बच्चे अपनी सोच को अच्छी तरह काम में भी नहीं ला पाते।

बच्चों को दिए जाने वाला यह समय वेट–टाइम (wait-time) या प्रतीक्षा–समय कहा जाता है।

विभिन्न शोधों में सामने आया है कि प्रतीक्षा–समय थोड़ा बढ़ाने से भी बच्चों की प्रतिक्रिया में भारी अंतर आ जाता है। यदि शिक्षक प्रश्न पूछने के बाद केवल 3.5 सैकेण्ड इंतजार कर लेते हैं तो बच्चों की प्रतिक्रिया कई तरह से बेहतर हो जाती है, जैसे–

(i) बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

(ii) बोलने या हाथ उठाने वाले बच्चों की संख्या ज़्यादा बढ़ जाती है।

(iii) बच्चों के बेहतर ज़वाब आने लगते हैं।

(iv) बच्चों के ज़वाबों में ज़्यादा विविधता और कल्पनाशीलता दिखने लगती है।

(v) बच्चे अपनी ओर से ज़्यादा चीज़ें बताने लगते हैं।

यदि शिक्षक बच्चों को प्रतीक्षा–समय दे रहे हैं तो उन्हें यह काम धैर्य और प्रोत्साहन के साथ करना होगा। साथ ही कभी–कभी, हमेशा ज़्यादा बोलने वाले बच्चे को थोड़े प्यार से रोकना भी पड़ेगा ताकि ज़्यादा शर्मीले, संकोची या सहमे हुए बच्चों को खुलने का अवसर मिल सकें।

8.2.2 कक्षा में विस्तारित बातचीत को प्रोत्साहन देने के लिए अध्यापक कुछ इस तरह के वक्तव्यों का प्रयोग कर सकते हैं :

क्या तुम इस बात को थोड़ा और खुलकर बता सकते हो?	तो तुम ये कह रहे हो कि ...	मैं यह जोड़ना चाहता/चाहती हूँ ...	इसी का एक उदाहरण यह है कि ..
तुम जो बात कह रहे हो, क्या उसके बारे में कुछ और बता सकते हो?	क्या तुम इसका कोई उदाहरण दे सकते हो?	क्या ऐसा भी हो सकता था कि ..	

आकृति–15

9. सीखना–सिखाना और सतत–आकलन

सतत या रचनात्मक आकलन को 'सीखने के लिए आकलन' (Assessment for Learning) भी कहते हैं। यह पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा होता है और लगातार चलता रहता है। इसे परीक्षाओं की तरह किसी ख़ास अवधि के बाद नहीं किया जाता। इसके लिए अध्यापक को प्रत्येक बच्चे की सीखने की स्थिति समझनी होती है, जिसमें उसकी कठिनाइयों और उपलब्धियों पर नज़र रखनी होती है ताकि जहाँ भी सुधार की ज़रूरत हो, वहाँ अध्यापक सुधारात्मक कदम उठा सकें। इसे सतत या रचनात्मक आकलन भी कहा जाता है।

सतत आकलन के उद्देश्य हैं :

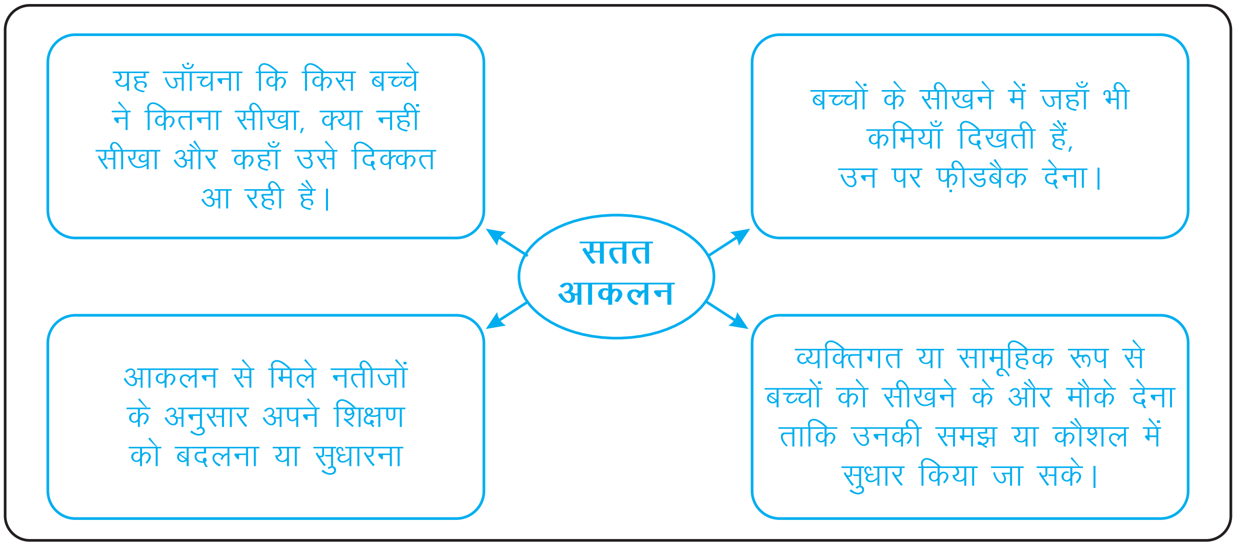

आकृति–16

सतत आकलन में ध्यान देने लायक तीन पहलू हैं :

I. ये आकलन लगातार चलते रहते हैं। शिक्षण का अभिन्न हिस्सा होते हैं, और किसी खास समय में परीक्षाओं की तरह नहीं किये जाते।

II. इनमें हर एक बच्चे पर ध्यान दिया जाता है।

III. इनमें आगे सुधार के लिए कार्यवाही भी होती है, जैसे– बच्चे को फ़ीडबैक देना और शिक्षण में आवश्यकता अनुसार सुधार करना।

सतत आकलन में कई तरीके इस्तेमाल करने की ज़रूरत पड़ती है, ताकि लगातार देखा जा सके कि बच्चे ठीक से समझ रहे हैं या सिखाया गया काम कर पा रहे हैं या नहीं। ये तरीके निम्न हो सकते हैं :

बच्चों को काम करते हुए देखना	अभ्यास या जाँच की वर्कशीट	बच्चों की बातचीत सुनना
प्रश्नोत्तर करना	बच्चों को सवाल करने के लिए प्रेरित करना	बच्चों का गृहकार्य या कक्षा में काम जाँचना
ग्राफिक ऑर्गेनाइज़र	बच्चों से सवाल पूछना	बच्चों द्वारा अपने शब्दों में बताना

आकृति–17

9.1 आकलन के बाद : फ़ीडबैक और सुधार के लिए मदद

आकलन का काम इससे कहीं ज़्यादा है कि शिक्षक को पता लग जाए कि कौन से कौशलों में बच्चे ने अभी महारत हासिल नहीं की है। सिर्फ़ सीखने में कमियाँ जानना भर काफी नहीं। इससे कहीं ज़्यादा ज़रूरी यह है कि आकलन के बाद क्या होता है, यानी बच्चे और शिक्षक मूल्यांकन के नतीजे को किस प्रकार इस्तेमाल करते हैं। गुस्की (2008) ने दर्शाया कि शिक्षण व्यवस्थाओं और शिक्षकों द्वारा आकलन के बाद की 'बाकी की कहानी' छोड़ दी जाती है। इसकी वजह से आकलन से जो बच्चों की उपलब्धि में सुधार लाया जा सकता है वो नहीं मिलता। उनके अनुसार सतत आकलन में यह तीनों चरण पूरे होने आवश्यक हैं–

I. सीखने की प्रगति की नियमित जाँच
II. हर एक बच्चे के सीखने में कमियों और कठिनाइयों को समझना
III. बच्चों के बेहतर सीखने के लिए सुधारात्मक कदम

दिया हुआ चित्र शिक्षण, आकलन और सुधार का पूरा चक्र दर्शाता है

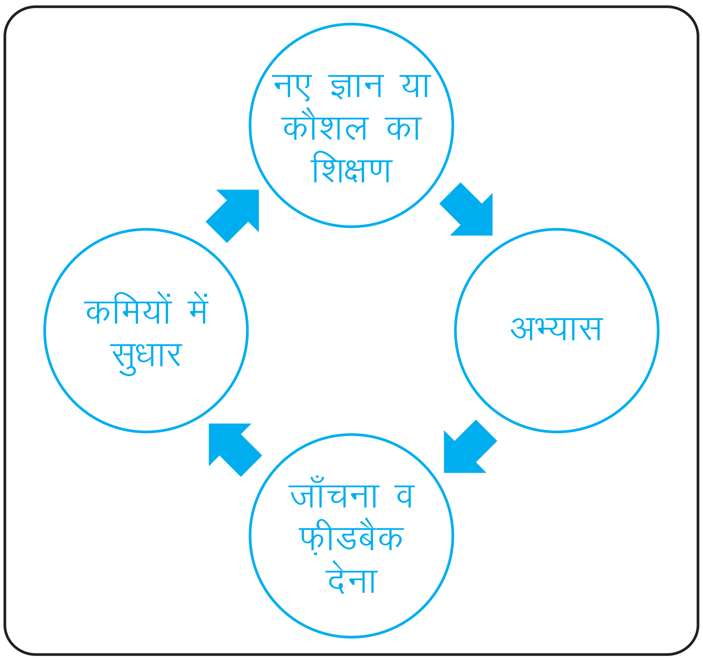

आकृति–18

यूनिसेफ़ द्वारा सीसीई (सतत और व्यापक आकलन) पर किए अध्ययन (धीर झिंगरन 2016) से पता चला कि भारतीय कक्षाओं में आकलन का सारा ध्यान रिकार्ड रखने और कागज़ तैयार करने पर है, बजाय इसके कि आकलन के नतीजों को बच्चों के सीखने में सुधार लाने के लिए प्रयोग किया जाए।

जैसा कि हम देख सकते हैं, सतत आकलन के बाद ये कदम उठाने ज़रूरी हैं–

I. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को इस प्रकार ढालना या बदलना जिससे ज़्यादातर बच्चों की समस्याओं का समाधान किया जा सके। उदाहरण के लिए, यदि पिछला विषय या कौशल अच्छी तरह नहीं सीखा गया है तो उसे दोबारा नए तरीके से सिखाना।

II. उन बच्चों को अलग से सहायता देना जो किसी विशेष कौशल या ज्ञान में बाकी बच्चों से पीछे हैं। उदाहरण के लिए, जो बच्चे अक्षरों की पहचान नहीं सीख पाए हैं, उनका अलग समूह बनाकर उन्हें अक्षर–कार्ड और अन्य सामग्री दी जानी चाहिए।

ध्यान दें कि सीखने के दौरान कमियाँ सुधारने के लिए केवल पहले वाली शिक्षण विधि का दोहराव काफ़ी नहीं है, जैसे– फिर से विषय को उसी तरह पढ़ा देना या बच्चों को दोबारा से उतारने के लिए या दोहराने के लिए कहना। यदि उस विधि ने एक बार काम नहीं किया है तो आगे भी उसके प्रभावी होने की संभावना काफ़ी कम है।

सतत आकलन अपने आप में शिक्षक को यह बताने से ज़्यादा कुछ नहीं कर पाएगा कि बच्चे क्या–क्या चीज़े सीख पाए हैं और क्या नहीं। लेकिन केवल आकलन करने से शिक्षण या सीखने की गुणवत्ता में सुधार नहीं आ सकता । इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आकलन के बाद क्या किया जाता है, यानी आकलन के नतीजों का शिक्षक और बच्चे कैसे प्रयोग करते हैं।

9.2 बच्चों के अलग–अलग स्तर

हम पिछले मॉड्यूल में देख चुके हैं कि एक ही कक्षा में बच्चों के विकास में बहुत अंतर होता है, क्योंकि वे बहुत अलग–अलग परिवेश और अनुभवों के साथ आते हैं। बच्चे जब स्कूल में कदम रखते हैं, उसी समय उनके विकास में भारी अंतर होता है। स्कूल में, शुरुआती सालों में उनका, सीखने का मार्ग भी बहुत अलग होता है। **यह मान लेना कि एक कक्षा में ज़्यादातर या सभी बच्चे सीखने के एक ही स्तर पर होंगे, सही नहीं है। शिक्षण का मकसद यह है कि हम सुनिश्चित कर पाएँ कि सब बच्चे अपने विकास के शुरुआती बिंदु के मुकाबले अच्छी प्रगति कर रहे हैं।** इसलिए आकलन, फ़ीडबैक और सुधारात्मक कार्य हर बच्चे की ज़रूरत के अनुसार किया जाना चाहिए, यह देखते हुए कि उसका मौजूदा स्तर क्या है और वह सीखने में कितनी प्रगति कर पा रहा है।

9.3 आकलन और फ़ीडबैक : केस स्टडी

केस स्टडी–8

बच्चों के आकलन और फ़ीडबैक के बारे में दो शिक्षकों के तरीके

शिक्षक–1 : सुश्री आरती, रामपुर के पास एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा चार की शिक्षिका हैं।

हाल ही में मैंने 'बस के नीचे बाघ' पढ़ाना खत्म किया।

मैंने इसके बाद विद्यार्थियों के वर्तनी कौशल को जाँचना तय किया। मैंने पाठ से दस कठिन शब्द ब्लैकबोर्ड पर लिखे और विद्यार्थियों से कहा कि वे अपनी कॉपी में उनकी नकल करें और कल टेस्ट के लिए तैयार रहें।

अगली सुबह, मैंने एक–एक करके वे शब्द पढ़े और बच्चों से उन्हें लिखने को कहा। मैंने उनकी कॉपियाँ लीं, काम जाँचा और कॉपियाँ लौटा दीं। कई विद्यार्थियों को पूरे अंक मिले थे। कुछ बच्चों ने वर्तनी की गलतियाँ की और उन्हें अंक भी कम मिले। मैंने कहा कि जिन्हें सबसे ज़्यादा अंक मिले हैं, वे अपने हाथ खड़े करें। इसके बाद जिन्हें कम मिले हैं, वे करें। जिन लोगों का प्रदर्शन कम अच्छा रहा था, मैंने उनसे कहा कि वे घर में फिर से इन शब्दों को लिखने का अभ्यास करें।

शिक्षक–2 : श्री दिवाकर, कानपुर के एक स्कूल में कक्षा पाँच के शिक्षक हैं।

पिछले कुछ पाठों में मेरे विद्यार्थियों ने जो शब्द सीखे, मैं उन शब्दों के लिए उनके वर्तनी कौशल का आकलन करना चाहता था। मैंने उनसे कहा:'आज हम श्रुतलेख (डिक्टेशन) करेंगे।'

मैंने विद्यार्थियों को चार समूहों में काम करने को कहा। उन्हें समझाया कि मैं पाँच छोटे वाक्य पढ़कर सुनाऊँगा। लिखना शुरू करने से पहले उन्हें हर वाक्य को सुनना होगा। मैंने तसल्ली की कि हर कोई निर्देशों को समझ गया है। इसके बाद मैंने कुछ वाक्य पढ़कर सुनाए और उन्हें लिखने के लिए विद्यार्थियों को समय दिया।

जब उन्होंने काम पूरा कर लिया, तो मैंने बच्चों से कहा कि वे अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ अपने कार्य की तुलना करें, चर्चा करें और यदि ज़रूरी हो, तो सुधार करें। अंत में, मैंने ब्लैकबोर्ड पर वाक्यों को खुद लिखा और बच्चों से अपने वाक्यों की तुलना करने को कहा।

इस दौरान, मैंने कक्षा का चक्कर लगाया और देखा कि कौन चर्चा में भाग ले रहा है, किसने अपने वाक्य पहली ही बार में सही तरीके से लिख लिए और किन को अपना काम बाद में सुधारना पड़ा। मैंने यह अवलोकन अपनी पुस्तिका में दर्ज़ किया।

अगले दिन, मैंने कक्षा को बताया कि पिछले दिन हुई गतिविधि के दौरान मुझे वर्तनी से जुड़ी किन विशिष्ट समस्याओं का पता चला है। मैंने ऐसा करते समय यह सुनिश्चित किया कि जिन विद्यार्थियों को उस कार्य में कठिनाई महसूस हुई थी, वे लज्जित महसूस न करें।

अब मैं हर विषय के बाद इस तरह की एक गतिविधि करता हूँ। मेरे विद्यार्थी भी इसके लिए उत्सुक दिखाई देते हैं। मैंने पाया है कि यदि हर समूह में उच्च स्तर की उपलब्धि वाले एक विद्यार्थी को शामिल किया जाए, तो यह सबसे ज़्यादा प्रभावी होता है, क्योंकि वह बच्चा समूह के दूसरे बच्चों की सहायता कर सकता है।

यह केस स्टडी TESS India के निगरानी, आकलन और फ़ीडबैक मॉड्यूल से लिया गया है

अभ्यास कार्य–4

इस केस स्टडी में आपको किस शिक्षक के सतत आकलन की रणनीति बेहतर लगी? शिक्षक–1 / शिक्षक–2

इसके दो कारण लिख कर मेंटर को भेजें –

....

....

अपना उत्तर भेजने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

गतिविधियों के उत्तर

गतिविधि–6

हमारे अनुसार इसमें दो प्रमुख बातें हैं –

1. स्कूल की दुनिया बच्चों के अनुभव, ज्ञान और उनके सांस्कृतिक परिवेश को सिरे से नज़रअंदाज करती है।
2. बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में तथा हमारे प्राथमिक स्कूलों में चर्चा व संवाद को महत्व नहीं दिया जाता इसका पूरी तरह अभाव होता है।

गतिविधि–8

हमारे अनुसार 3, 4 और 5 विकल्प इस स्थिति पर ज़्यादा सही बैठते हैं।

गतिविधि–9

हमारे अनुसार 1, 2 और 3 में बच्चे के मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक रूप से सक्रिय होने और जुड़ने की संभावना सबसे कम है।

गतिविधि–13

उत्तर–3. 1, 4, 7, 9, 10, 11

निष्कर्ष और सारांश

1. सीखना वह प्रक्रिया है जिसके ज़रिए हम नए अनुभव लेते हैं। अपने मस्तिष्क में अनुभवों पर सुनते व सोचते हैं और इस प्रकार नई समझ विकसित करते हैं। हम हर समय कुछ–न–कुछ अनुभव कर ही रहे होते हैं, हम हर समय सीखते रहते हैं।

2. बच्चों को बहुत सारे ऐसे अनुभव मिलने चाहिएँ जिनमें बच्चों को कुछ करने, सोचने, अभिव्यक्त करने और चर्चा करने के मौके मिले।

3. बच्चे तभी सीखते हैं जब वे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से सक्रिय रूप से जुड़े हों।

4. कक्षा में शिक्षण को बच्चों की दुनिया, उनके अनुभवों और सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ना चाहिए।

5. बच्चों के पूर्वज्ञान व अनुभव उनके नए ज्ञान अर्जन पर बहुत प्रभाव डालते हैं। हर बच्चे के मौजूदा अनुभव और विचार एक जैसे नहीं होते। इस ज्ञान व अनुभवों का शिक्षण में बेहतरीन इस्तेमाल किया जा सकता है।

6. बच्चों के सीखने का बहुत बड़ा हिस्सा दूसरों के ज़रिए आता है। बच्चों की आपस में और शिक्षक के साथ बातचीत, जोड़ों में और समूहों में काम करने के अवसर दूसरों के साथ सीखने को बढ़ावा देते हैं।

7. कक्षा में ख़ुशनुमा, सौहार्द व प्रेम भरा वातावरण सीखने में बहुत मदद करता है।

8. बिना मानसिक, शारीरिक या भावनात्मक रूप से जुड़े व सक्रिय हुए बच्चे का सीखना असंभव है। सभी बच्चों के जुड़ाव सुनिश्चित करने के लिए छूट जाने वाले बच्चों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

9. बच्चों को गहराई से सोचने को उकसाने के लिए कक्षा में चर्चा, बातचीत, खुले छोर वाले प्रश्न जैसी विधियाँ लाभकारी होती हैं।

10. विस्तारित वार्तालाप एक कारगर विधि है, जिससे कक्षा में सामूहिक अंतःक्रिया, शिक्षक व बच्चों के बीच संवाद बढ़ाने और उसके ज़रिए सीखने की प्रक्रिया में प्रभावी बनाने के अवसर मिलते हैं।

11. प्रश्न पूछने के बाद यदि शिक्षक बच्चों को ज़्यादा सोचने का समय देते हैं तो बच्चों की भागीदारी, गुणवत्ता व मात्रा में बहुत बढ़ जाती है।

12. सतत आकलन शिक्षण के साथ चलने वाली तथा शिक्षण के प्रभाव का जायज़ा लेने वाली प्रक्रिया है। इससे शिक्षक को लगातार बच्चों के सीखने में कमियाँ पता लगती रहती है। इसका भरपूर फायदा तब मिलता है, जब बच्चों को कमियों पर तुरंत सकारात्मक फ़ीडबैक दिया जाए। साथ ही आवश्यकता अनुसार शिक्षण को ढाला या बदला जाए।

13. क्योंकि बच्चों के शैक्षिक विकास के स्तर अलग–अलग होते है तो सबसे आवश्यक है कि बच्चा अपने मौजूदा स्तर के मुकाबले अच्छी प्रगति कर पाएँ। उसे फ़ीडबैक और सहायता भी उसकी ज़रूरत के अनुसार मिले, न कि पूरी कक्षा के सामान्य स्तर के समान।

स्व–आकलन

1. खाली स्थान भरें –

(i) बच्चे के लिए सीखने का सबसे प्रभावी कार्य वह होता है जो उसके सामर्थ्य स्तर .... (पर/से कुछ ऊपर) होताहै।

(ii) स्कूल में सीखने की प्रक्रिया शुरू करने का एकमात्र तरीका है बच्चों की ...., ... तथा .... के साथ शुरूआत की जाए।

(iii) नई जानकारी/कौशल + पूर्व जानकारी/कौशल = ...

(iv) बच्चों के पूर्वज्ञान को शिक्षण में इस्तेमाल करने के तीन मुख्य पहलू हैं :

- बच्चों के पूर्वज्ञान को ....
- बच्चों के पूर्वज्ञान को ....
- बच्चों के ज्ञान भंडार को ....

2. नीचे दी गयी आकृतियों को पूरा करें –

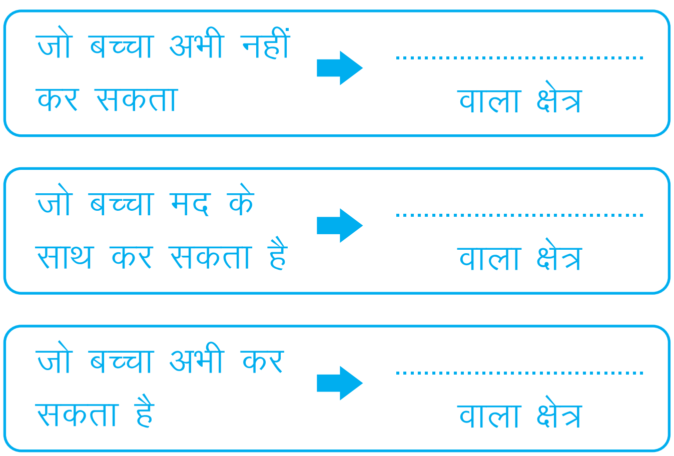

(i)

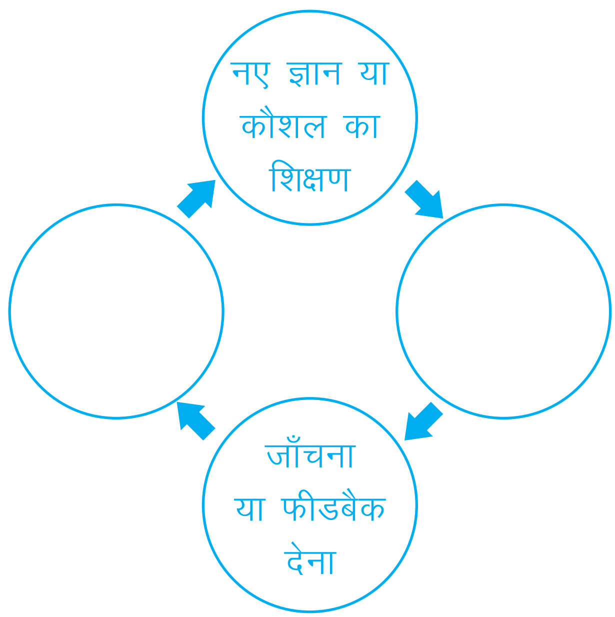

(ii)

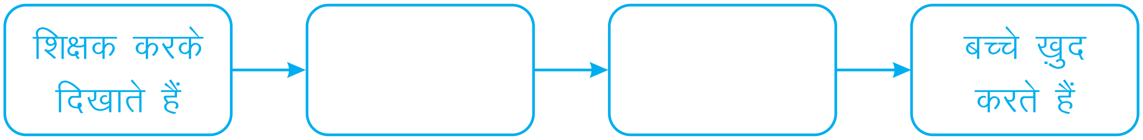

(iii)

3. मिलान करें –

(i)	स्कैफ़ोल्डिंग	क.	सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः बच्चों को सौंपना
(ii)	जी.आर.आर.	ख.	रचनात्मक ढंग से बात को आगे बढ़ाना
(iii)	सतत–आकलन	ग.	सहारा या मदद
(iv)	ज़ेड.पी.डी.	घ.	लगातार चलता रहता है
(v)	विस्तारित वार्तालाप	ङ.	नया सीखने का क्षेत्र

5. निम्नलिखित कथनों की समीक्षा करें और बताएँ कि यह सही हैं या गलत –

(i) अगर बच्चे कक्षा में सीख नहीं पा रहे हैं तो इसमें गलती बच्चों की हैं। (सही / गलत)

(ii) जब अध्यापक बच्चों के पूर्व ज्ञान पर करीब से ध्यान देते हैं और शिक्षण के लिए उस ज्ञान को एक प्रस्थान बिंदु के रूप में प्रयोग करते हैं तो सीखना ज़्यादा प्रभावी हो जाता है। (सही / गलत)

(iii) कक्षा में छोटे समूहों में काम कराना लाभकारी नहीं होता है, क्योंकि बच्चे एक दूसरे से बातों में अपना सारा समय निकाल देते हैं, जिससे उन्हें कुछ सीखने को नहीं मिलता। (सही / गलत)

(iv) किसी भी बच्चे के सीखने के लिए प्रेरणा के साथ उसका खुद पर विश्वास बहुत ज़रूरी है। इन दोनों के लिए अध्यापक का प्रोत्साहन मुख्य भूमिका निभाता है। (सही / गलत)

(v) बच्चों को सोचने को उकसाने के लिए बन्द छोर वाले प्रश्न अच्छे होते हैं। (सही / गलत)

स्व–आकलन प्रश्नों के उत्तर :

1. (i) से कुछ ऊपर
   (ii) भाषाओं, परिचित सांस्कृतिक संदर्भों, पूर्ववर्ती ज्ञान
   (iii) नया अधिगम / नया ज्ञान
   (iv) जानना, सक्रिय करना, बढ़ाना
2. (i) तनाव व हताशा
   (ii) अभ्यास, कमियों में सुधार
   (iii) शिक्षक बच्चों की मदद लेते हैं, बच्चे खुद करते हैं।
3. ग, क, घ, ड़, ख
4. (i) गलत
   (ii) सही
   (iii) गलत
   (iv) सही
   (v) गलत

अभ्यास कार्य

अभ्यास कार्य–1	पृष्ठ संख्या 12
अभ्यास कार्य–2	पृष्ठ संख्या 34
अभ्यास कार्य–3	पृष्ठ संख्या 42
अभ्यास कार्य–4	पृष्ठ संख्या 56

कॉल प्रश्न

1. पाठ्यपुस्तक तो राज्य स्तर पर बनती है, फिर प्रारंभिक भाषा कक्षाओं में भाषा के काम में बच्चों के अनुभवों और संदर्भों को कैसे जोड़ा जा सकता है? कुछ उदाहरण दीजिए।
2. 'ज़ेड.पी.डी.' 'स्कैफ़ोल्डिंग' और 'सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः बच्चों को सौंपना' – इनमें आपस में क्या संबंध है? इसको समझाएँ।
3. क्या छोटे बच्चो के साथ विस्तारित बातचीत संभव है? हाँ / नहीं क्यों ? यदि हाँ तो कैसे?
4. मॉड्यूल में हमने जिन 9 सिद्धांतों और रणनीतियों पर विचार किया है, क्या वे हमारी कक्षाओं में बहुस्तरीय अधिगम परिस्थितियों को संबोधित करने में मदद देती हैं? आपके अनुभव क्या हैं?

अनिवार्य पठन सामग्री

1. कोई बच्चा बात नहीं करेगा! भाषा की कक्षाओं में बोलना और चुप कराना : भेद, संवाद और अधिगम के बारे में

(यह 'लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग' पत्रिका के जनवरी 2014 अंक में प्रकाशित रेवा यूनूस के लेख का एक अंश है)

अज्जू की कक्षा में होने वाली बातचीत और उसके घरेलू माहौल के बीच मुझे जो बुनियादी फ़र्क दिखाई दिया वह बातचीत से संबंधित था – अज्जू की हैसियत, बातचीत में उसकी सहभागिता, वयस्कों के साथ उसके संबंध का भावात्मक पहलू और दोनों परिस्थितियों में संवाद की विषयवस्तु। कक्षा में सारी बातचीत सुनीता नियंत्रित करती थीं, ख़ासतौर से बच्चों की बातचीत को। सुनीता के सवालों पर प्रायः 'सही' ज़बाव देने वाली एक लड़की के अलावा कोई भी बच्चा सुनीता के साथ बातचीत शुरू नहीं करता था सिवाय ऐसी स्थिति के, जब होमवर्क या टेस्ट की तारीखों के बारे में किसी को पूछना होता था। सुनीता ही तय करती थीं कि बच्चों को किन शब्दों में मदद की ज़रूरत है और वह परस्पर मदद की कोशिशों को सही नहीं मानती थीं। बच्चों के साथ उनकी बातचीत "बंद छोर वाले प्रश्न" (ऐसे प्रश्न जिनके जबाव में केवल एक या कुछ शब्दों की ही आवश्यकता हो, अधिकांशतः तथ्यात्मक किस्म के प्रश्न) पूछने और उनका ज़बाव देने, ज़बावों को सही या गलत बताने, और बच्चों को डाँट–फटकार लगाने तक ही सीमित थी। अगर कोई बच्चा भ्रमित दिखाई पड़ता या उसका मन नहीं लग रहा होता था तो भी वह नहीं रुकती थीं और न ही चीज़ों को नए ढंग से करने की कोशिश करती थीं। लिहाज़ा, कक्षा में होने वाली बातचीत केवल प्रस्तुति संबंधी बातचीत होती थी जिसमें अज्जू कभी हिस्सा नहीं लेता था। न तो वह कभी सवाल पूछता था न ही किसी सवाल का ज़बाव देता था। किसी दिन स्कूल से ग़ैर–हाज़िर रहने के अलावा वह किसी भी ढंग से सुनीता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं करता था। जब वह स्कूल से ग़ैर–हाज़िर रहने के बाद स्कूल में आता था तो उसे इस बात के लिए झिड़की लगाई जाती थी कि वह स्कूल को गंभीरता से नहीं लेता है। दूसरी तरफ़ घर में अन्वेषणपरक बातचीत का भरपूर अवसर मौजूद था। अज्जू बार–बार अपने चाचा, दादा या चचेरे भाई–बहनों के साथ अपनी बातचीत का उल्लेख करता था। वह उनसे सवाल पूछने या फिल्मों वगैरह पर चर्चा करने में बहुत सहज महसूस करता था।

सुनीता के हिसाब से किसी अध्याय को समझाने का मतलब है उसमें आए 'कठिन शब्दों' के अर्थ बता देना ।' हालाँकि वह हमेशा शब्दों के अर्थ लिखवाती थीं और बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करती थीं कि वे उन्हें याद रखें मगर **नए शब्दों, विचारों, कहानियों या कविताओं को ऐसी किसी चीज़ के साथ जोड़कर दिखाने का प्रयास कभी नहीं करती थी जो बच्चों ने कक्षा के बाहर पढ़ा/सुना/महसूस किया हो या जिस पर उन्होंने चर्चा की हो।** लिहाज़ा, सुनीता के हिसाब से अज्जू (या दूसरे बच्चों) के पास ऐसी कोई

क्षमता या ज्ञान नहीं था जो कक्षा में न किया गया हो, ख़ासतौर से कोई ऐसी चीज़ जो उसे हिंदी/अंग्रेज़ी में अपना भाषा कौशल विकसित करने में मदद दे पाए। **यह पद्धति उन संज्ञानात्मक एवं भावात्मक क्षमताओं को नकारती है जो अज्जू ने अपने सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित की थीं। कुल मिला कर सुनीता बच्चों को 'कोरी तख्ती' मानने वाली धारणा में यकीन रखती थी (जिसका मतलब यह है कि बच्चे जब स्कूल आते हैं तो उनके पास जानने या सीखने लायक कोई चीज नहीं होती और उनके दिमाग खाली बर्तन होते हैं जिनको अध्यापक द्वारा 'उपयोगी' सूचनाओं और ज्ञान से भरा जाना है।)** अपने प्राथमिक विमर्श (डिस्कोर्स) के माहौल में अज्जू की हैसियत बिलकुल भिन्न थी। वह अपनी छोटी बहन अंजलि को संभालता था ताकि उसकी माँ काम पर जा सकें और परिवार का गुजारा चल पाए। वह अपने कुनबे में अपनी भूमिका और स्थिति को भी सीखता जा रहा था। घर में वह लगातार अपनी बहन से बात करता था और अपने इस संबंध, अपनी भूमिका से बच्चों के बारे में (उनके व्यवहार, ज़रूरतों, विकास की श्रृंखला) सीखता जा रहा था।

भाषा शिक्षण में बोलने और संवाद को उनका उचित स्थान देने के लिए ज़रूरी है कि कक्षा में बच्चों के अनुभवों और विचारों का स्वागत ज़रूर किया जाना चाहिए । इसके अलावा, जिन बच्चों के प्राथमिक विमर्श उनकी कक्षाओं के विमर्श से बहुत भिन्न हैं, ऐसे स्कूलों/अध्यापकों को इन भिन्नताओं को समझने और इससे सीखने–सिखाने पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने के लिए ज़रूर प्रयास करना चाहिए। उन्हें ऐसे बच्चों को इसके लिए भी मदद देनी चाहिए कि वे कक्षा के विमर्श में अपनी सहभागिता के ज़रिए अपने मौजूदा ज्ञान और भाषायी सामर्थ्य को और पुष्ट करें।

ऐसा क्यों है कि संज्ञानात्मक, भाषायी और सामाजिक दृष्टि से अर्थग्रहण की इस अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रक्रिया (बच्चों का बोलना और उनके साथ संवाद) को कक्षा में महत्वपूर्ण ही नहीं माना जा रहा था? प्राथमिक (घर पर होने वाला) और द्वितीयक विमर्श (स्कूल में होने वाला) के बीच एक और महत्वपूर्ण फ़र्क संबंधों के स्वरूप में दिखाई पड़ता है। घर में अपने परिवार वालों के साथ और कक्षा में सहपाठियों के साथ अज्जू के संबंध ही उसकी बातचीत के स्वरूप और गुणवत्ता को तय करते थे। वह अपने परिवार के ज़्यादातर लोगों के साथ सहज महसूस करता था और अपनी देखभाल के लिए उन पर भरोसा कर सकता था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे आमतौर पर उसका पक्ष सुनने के लिए तैयार रहते थे और उसे एक सक्षम व्यक्ति के रूप में देखते थे। घर में इस प्रकार के संबंधों के विपरीत, सुनीता के साथ उसके रिश्ते में कोई भावात्मक तत्व नहीं था। यद्यपि यह अभाव सुनीता के संस्थागत संदर्भ से भी पैदा हुआ था, जहाँ पर यदि कोई बच्चा गरीब और निरक्षर परिवार से है तो ज़्यादातर अध्यापक प्रायः ख़ुद को ऐसे अभिभावकों या बच्चों के प्रति जवाबदेह नहीं मानते। लिहाज़ा, हैरत की बात नहीं है कि सुनीता अकसर अपने बच्चों को धमकाती थीं, उनका मजाक उड़ाती थी और उन्हें सज़ा देती थी। फलस्वरूप, स्कूल के फाटक से भीतर आते ही अज्जू की आँखों से वह झिलमिलाहट, शोखी और हर वक्त छाई रहने वाली मुस्कुराहट व कहकहे काफ़ूर हो जाते थे। वह चुपचाप, बैचेन और चौकस दिखाई देने लगता था। उसमें गर्माहट, दोस्तानेपन और सहजता का भाव खत्म हो जाता था।

हमें किन चीज़ों की फ़िक्र करनी चाहिए?

ज़ाहिर है कि अज्जू जो कुछ भी है और कर सकता है, वह कक्षा के विमर्श द्वारा काफी हद तक नकार दिया गया है। संस्थागत अध्यापक–विद्यार्थी संबंध (जो पाठ्यचर्या द्वारा परिभाषित हैं) सीखने के लिए बच्चों के बोलने या बातचीत की प्रासंगिकता को अथवा अज्जू के अनुभव और भाषा सीखने की उसकी क्षमता के बीच संबंध को मान्यता नहीं देता। सीखने की प्रक्रिया अनुभवों की एक सतत प्रक्रिया के परिणाम के रूप में सामने आती है। कक्षा में इस तरह के अनुभव बच्चों के साथ संवाद या खोजपूर्ण चर्चाओं के ज़रिए मुहैया कराए जा सकते हैं। मगर यहाँ यह पहलू पूरी तरह नदारद है।

दिलचस्प बात यह है कि सुनीता भी इसी स्कूल में पढ़ी है। इसीलिए, कम से कम एक विद्यार्थी के रूप में वह भी कमोबेश अपने बच्चों जैसी सामाजिक–आर्थिक श्रेणी से ही रही हैं। इसके बावजूद, वह अपने बच्चों की क्षमताओं और मजबूरियों के प्रति संवदेनशील नहीं थीं और उन्हें वैसी ही असमतापरक शिक्षा दे रही थी, जैसी संभवतः ख़ुद उसे मिली थी। यह केस स्टडी डेनिसन के इस वक्तव्य की पुष्टि करती है कि बच्चों को समझने और मदद देने के लिए ज़रूरी है कि "अध्यापक वैसे ही हों जैसे वे हैं न कि केवल वैसा होने का अभिनय करें।" मगर ऊपर से नीचे की ओर केंद्रित सख्त संस्थागत रूपरेखाएँ अध्यापकों को वैसा नहीं रहने देतीं जैसे वे होते हैं। इसके अलावा, अध्यापकों को इसका प्रशिक्षण भी नहीं दिया जाता है कि वे अपने व्यवहार की समीक्षा के महत्व को समझें, अपनी खुद की प्रगति और समस्याओं की समीक्षा करें।

असाइनमेंट

इस मॉड्यूल में आपने सीखने के 9 सिद्धांतों के बारे में पढ़ा है। असाइनमेंट के इन 9 सिद्धांतों में से आपको किसी भी एक सिद्धांत को चुनना है और उसे किसी अन्य शिक्षक/शिक्षक समूह (जो कक्षा 1 से 3 में पढ़ाते हों) या डाइट के छात्र/छात्रों को समझाना है।

इस असाइनमेंट के लिए आपको दो भागों में कार्य करने हैं : **(कुल अंक 10)**

भाग 1 : किसी एक सिद्धांत पर कोई सामग्री बनाना : (4 अंक)

मॉड्यूल की इकाई 2 में दिए गए 9 सिद्धांतों में से किसी एक को लेकर आपको कोई भी एक सामग्री बनानी होगी जिसका प्रयोग आपको किसी और को समझाने के लिए करना होगा।

यह सामग्री हो सकती है :

- एक हैंडआउट (Handout) – जो कम से कम 150 से 200 शब्द का हो।

  हैंडआउट का प्रारूप देखने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन करें;

  या

- एक पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन/पीपीटी (Powerpoint Presentation/PPT) – जो कम से कम 5 से 6 स्लाइड्स का हो।

  पीपीटी का प्रारूप देखने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन करें :

भाग 2 : सिद्धांत को समझाने के लिए बनाई गई सामग्री का प्रयोग : (6 अंक)

भाग 1 के अंतर्गत बनाई गई सामग्री का प्रयोग कर आपको किसी अन्य शिक्षक (कक्षा 1, 2 या 3 के भाषा शिक्षक) या डाइट के छात्र/छात्रों को, उस सिद्धांत को समझाना है। यदि आप चाहें तो एक से अधिक शिक्षकों को भी चुन सकते हैं।

असाइनमेंट के लिए आपको क्या भेजना होगा :

- भाग 1 के अंतर्गत किसी एक सिद्धांत पर आपके द्वारा बनाई गई सामग्री (हैंडआउट या पीपीटी) को भेजना होगा। (4 अंक)
- सिद्धांत को समझाने के लिए आपने जिस शिक्षक/जिन शिक्षकों/डाइट के छात्र/छात्रों का चुनाव किया उसके कारण। उनका नाम व उनके कार्यस्थल से संबंधित जानकारी। (1 अंक)
- चर्चा कहा हुई और बनाई गई सामग्री का प्रयोग कर आपने सिद्धांत को कैसे समझाया, उसकी प्रक्रिया का संक्षेप में विवरण। (1 अंक)
- शिक्षक/शिक्षकों/डाइट के छात्र/छात्रों के प्रश्न, सिद्धांत को कक्षा में लागू करने पर कोई शंका व आपके प्रस्तुतीकरण पर उनकी प्रतिक्रिया। (2 अंक)
- इस पूरी प्रक्रिया पर आपका चिंतन व विश्लेषण। आपने जो सामग्री तैयार की थी उसे और बेहतर कैसे किया जा सकता है, उसके लिए कम से कम 2 सुझाव। (2 अंक)
- अपना उत्तर टाइप करके मेंटर को व इस ईमेल पते– llfassignments@gmail.com पर भेजें।

संदर्भ

1. वॉस्नियाडू, एस (2006), हाउ चिल्ड्रेन लर्न, एजुकेशनल प्रेक्टिसेज सीरीज 7, इंटरनेशनल एकेडेमी ऑफ एजुकेशन : इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजुकेशन। http://www.ibe.unesco.org/fileadmin/user_upload/archive/publications/EducationalPracticesSeriesPdf/prac07e.pdf से लिया गया।

2. एनसीएफ (2005), एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

3. रिपोर्ट फ्रॉम राउंडटेबल ऑन एनहांसिंग टीचिंग–लर्निंग आउटकम्स : यूनिसेफ इंडिया 2014, http://www.languageandlearning.in/pdfs/resources/Report-from-Discussion-on-Enhancing-Teaching-Learning-Outcomes.pdf

4. गोवे, ए तथा क्वेलिश, पी (2010), अर्ली रीडिंग : इग्नाइटिंग एजुकेशन फॉर ऑल, ए रिपोर्ट बाई दि अर्ली ग्रेड लर्निंग कम्युनिटी ऑफ प्रेक्टिस, रिसर्च ट्राएंगल पार्क, एनसी : रिसर्च ट्राएंगल इंस्टीट्यूट। https://www.rti.org/sites/default/files/resources/early-reading-report_gove_cvelich.pdf

5. ब्रिंकमेन, एस. (2016). द रोल ऑफ टीचर्स बिलीफ इन द इम्प्लीमेंटेशन ऑफ लर्नर– सेंटर्ड एजुकेशन इन इंडिया. यू.सी.एल. इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लंडन। discovery.ucl.ac.uk › Library Services › Electronic resources › UCL Discovery

6. झिंगरन, डी. (2016). रिव्यू ऑफ कन्टिनेवेश एवं कॉम्प्रीहेंवस इवेल्यूवेशन (सीसीई) इन 6 स्टेटस् ऑफ इण्डिया, यूनिसेफ़, नई दिल्ली।

कोर्स के सभी मॉड्यूल एक नज़र में

मॉड्यूल	विषय
मॉड्यूल–1	प्रारंभिक भाषा और साक्षरता : एक झलक
मॉड्यूल–2	प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण : एक समीक्षा
मॉड्यूल–3	सीखने–सिखाने के कुछ सिद्धांत और रणनीतियाँ
मॉड्यूल–4	प्रारंभिक कक्षाओं में संतुलित भाषा शिक्षण
मॉड्यूल–5	प्रारंभिक साक्षरता के बुनियादी कौशल : भाग–1
मॉड्यूल–6	प्रारंभिक साक्षरता के बुनियादी कौशल : भाग–2
मॉड्यूल–7	प्रवाह और समझ के साथ पठन : शिक्षण रणनीतियाँ भाग–1
मॉड्यूल–8	प्रवाह और समझ के साथ पठन : शिक्षण रणनीतियाँ भाग–2
मॉड्यूल–9	लेखन कौशल का विकास : शिक्षण रणनीतियाँ
मॉड्यूल–10	आकलन व कक्षा में बहुस्तरीय अधिगम स्थिति : कुछ रणनीतियाँ और पांच खंडीय रूपरेखा
मॉड्यूल–11	विविध भाषाई परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास
मॉड्यूल–12	भाषा व साक्षरता शिक्षण की रूपरेखा

© लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन 2018
इस कोर्स के तहत छपी किसी सामग्री का पुनः प्रकाशन लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन की अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता। यदि आप इसमें से कुछ सामग्री प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमें course@languageandlearningfoundation.org पर ईमेल भेजें।

इस कोर्स का संचालन टाटा ट्रस्ट्स के सहयोग से संभव हो पाया है। टाटा ट्रस्ट्स के लिए अध्यापक क्षमतासंवर्धन शिक्षा में विकास का एक बहुत महत्वपूर्ण बिंदु है, जिसके चलते वे इस कार्यक्रम के संचालन में योगदान दे रहे हैं।

संपर्क करें–
ऑफिस पता : लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन; बी–1/2, प्रथम तल, सफदरजंग एन्क्लेव, आन्ध्रा बैंक के पास, नई दिल्ली–110029
फ़ोन : 011–26106045
ईमेल : course@languageandlearningfoundation.org

लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन, रजिस्ट्रेशन नंबर–244/2015–16

मुद्रक : पिंक ग्राफिक्स, दिल्ली

LLF Language and Learning foundation

TATA TRUSTS